KAALSHARPYOG SHANTI

अनुक्रमणिका

नवीन संस्करण

1. पुस्तक परिचय
2. क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का?
3. कालसर्प योग केवल पितृदोष ही नहीं
4. क्या नासिक व अन्य तीर्थ-स्थलों पर कराया गया कालसर्प सही नहीं होता
5. कालसर्प योग काम नहीं कर रहा है?
6. कालसर्प विधि कराने से लाभ
7. विधवापन को हटाने वाला घट-विवाह
8. वैधव्ययोग
9. केमद्रुम शान्ति प्रयोग
10. कालसर्प योग किसे कहते हैं?
11. कालसर्प योग के बारे में भ्रान्तियाँ
12. कालसर्प योग के विविध प्रकार
13. कालसर्प योग निवृत्ति के उपाय
14. कालसर्प योग की सामग्री
15. कालसर्प योग की निवृत्ति हेतु मुहूर्त विचार
16. कालसर्प शान्ति
17. गंगापूजन
18. अथ गणेशगुर्वादीन्नमस्काराः
19. गणपति स्मरण
20. अथ मातृकास्थापनं पूजनम्
21. अथ सप्तघृतमातृका पूजनम्
22. नान्दी श्राद्ध
23. अथ नान्दीश्राद्ध प्रयोग
24. षोडशोपचार गणपति पूजनम्

25.	अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्	117
26.	विशेष ज्ञातव्य	128
27.	अथ नवग्रह-स्थापनम् (ग्रह-मण्डल)	133
28.	अथ अग्न्युत्तारण प्राण-प्रतिष्ठा	140
29.	।। अथ प्राण प्रतिष्ठा प्रयोग: ।।	141
30.	प्रधान पीठ	143
31.	नागपंचमी व्रत से सन्तान प्राप्ति	150
32.	सर्व नागादि विष निर्मलीकरण महामन्त्रा:	151
33.	सर्पवध-प्रायश्चित्त-कर्म	153
34.	अथ कुशकंडिका	156
35.	सर्पसूक्त	167
36.	अथ प्रधान होम द्रव्याणि	168
37.	होमान्ते उत्तरपूजनम्	173
38.	अथाभिषेक मन्त्रा:	177
39.	जल में सर्प छोड़ने का मन्त्र	178
40.	कालसर्प योग शान्ति: प्रार्थना	179
41.	।। नागसहस्रनामावलि: ।।	180
42.	कालसर्प योग जननशांतिप्रयोग:	186
43.	"अथ नागनीराजनम्"	190

पुस्तक परिचय

कालसर्प योग पर हमारी पहली पुस्तक सन् 1993 में प्रकाशित हुई। पुस्तक छपते ही ज्योतिष जगत, कर्मकाण्ड व पौरोहित्य की दुनिया में हंगामा मच गया। इस पुस्तक के अनेक संस्करण धड़ल्ले से बिके। साथ ही भारतवर्ष में जगह-जगह कालसर्प योग शान्ति के सामूहिक शिविर और पूजन की विशिष्ट परम्परा का श्रीगणेश हुआ। लोग चमत्कृत रूप से प्रभावित होने लगे। पुस्तक के अनेक संस्करण छपे लाखों जनमानस ने इसका लाभ उठाया।

इसी बीच हिन्दी, गुजराती, मराठी व अंग्रेजी भाषा में कई छद्म लेखकों ने इस पुस्तक की हूबहू नकल, थोड़ा बहुत उलट-पलट करके प्रकाशित कर दी। नकली नोट की भांति इस पुस्तक की नकली प्रतियां भी बाजार में विक्रीत होने लगीं। नकली लेखकों के कारण लोगों में कालसर्प योग के प्रति भ्रान्तियां बढ़ने लगी। इसी बीच कर्मकाण्ड विरोधी एवं ब्राह्मण विरोधी कुछ नास्तिक ताकतें भी उठ खड़ी हुईं। उन्होंने 'कालसर्प योग होता ही नहीं!' इस विषय पर भी पुस्तकें लिखनी शुरु कीं, सस्ती लोकप्रियता के लालच में ये लेखक भी पिट गए। कालसर्प योग का प्रचार व प्रसार द्रुतगति से बढ़ा। जिज्ञासु सज्जनों को सही विषय वस्तु की जानकारी अनुभव के आधार पर खरी होती दिखाई दी। कालसर्प योग इस सहस्राब्दी में ज्योतिष जगत का सबसे चर्चित विषय बन गया।

प्रबुद्ध पाठकों के अनेक रोचक-पत्र, कुछ समस्याएं एवं कुछ शंकाएं हमारे पास आई हैं। जिसका समयोचित समाधान अपेक्षित हैं। क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का? इस विषय को लेकर कई प्रस्तावना इस नवीन संस्करण में दी गई हैं। इसके साथ कालसर्प योग में जन्मे प्रसिद्ध लोगों की कुण्डलियों का विश्लेषण भी प्रबुद्ध पाठकों हेतु इस पुस्तक में प्रकाशित कर रहे हैं। कुछ आवश्यक संस्कृत श्लोकों का हिन्दी अनुवाद, अनेक शून्य महत्त्वपूर्ण शंकाओं का समाधान इस पुस्तक में नई प्राणशक्ति संचारित कर रहा है। जिसमें पं. रमेश द्विवेदी ने पूर्ण सहयोग दिया है।

सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह भी है कि फलित ज्योतिष में कालसर्प योग के विस्तृत अनुसंधान को देखते हुए 'कालसर्प योग भाग द्वितीय' अलग से प्रकाशित किया जा स्हा है। ये दोनों पुस्तकें रेमेडियल ऐस्ट्रोलोजी में मील का पत्थर साबित

हो रही हैं। इसलिए अत्यन्त अनमोल हैं। इन दोनों पुस्तकों के हिन्दी व अंग्रेजी संस्करण के प्रकाशन का अधिकार डायमण्ड पॉकेट बुक्स के निर्देशक व स्वामी श्री नरेन्द्र जी वर्मा को सौंप रहा हूँ। पुस्तक के मुखपृष्ठ पर मेरा चित्र, इस नवीन संस्करण में नामावली एवं डायमण्ड पॉकेट बुक्स का मार्का ही इस पुस्तक के असली होने की प्रत्याभूति है।

डॉ. भोजराज द्विवेदी

4.9.2006

क्यों विरोध करते हैं ज्योतिषी कालसर्प योग का?

कालसर्प योग ज्योतिष जगत का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण, रोचक, चर्चित एवं विवादास्पद योग बन चुका है। राजस्थान पत्रिका ने देश के शीर्षस्थ 12 विद्वानों के द्वारा साक्षात्कार लेकर इस योग पर सामइक टिप्पणियां प्रकाशित की, जिस पर 6 विद्वानों ने सकारात्मक तथा 6 विद्वानों ने नकारात्मक टिप्पणियां की। निष्कर्षत: कुछ भी निर्णय न निकलने के कारण लोग यथावत भ्रमित रहे। उस संस्थान द्वारा संचालित नि:शुल्क ज्योतिष प्रशिक्षण शिविर में भी लगभग 400 जिज्ञासुओं ने इस बिषय पर सांगोपांग चिन्तन पर शास्त्रीयचर्चा तीन घंटे तक की। एक विशेष कालसर्प योग के खिलाफ क्यों है? कई विद्वानों के कालसर्प योग के समर्थन में बड़े-बड़े लेख लिखे हैं तथा इस योग की शान्ति हेतु कई पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं। तो कई विद्वानों ने कालसर्प योग नहीं होता है? इस विषय पर भी पुस्तकें प्रकाशित कीं। कालसर्प योग नहीं होता है? इस विषय को सिद्ध करने के लिए नकारात्मक सोच वाले विद्वानों के सारगर्भित तर्क इस प्रकार हैं:-

1. प्राचीन किसी ग्रंथ में कालसर्प योग का उल्लेख नहीं मिलता?
2. यह ब्राह्मणों की कमाई का साधन है?
3. कालसर्प योग अशुभ नहीं होता क्योंकि यह योग बड़े-बड़े लोगों की कुण्डली में पाया जाता है? इसलिए यह योग शुभ है।
4. ऐसे भयानक नाम वाले योग की कल्पना ऋषि लोग कर ही नहीं सकते? यह बाद में फैलाया जाने वाला भ्रमजाल है।
5. राहु-केतु नामक कोई ग्रह आकाश में नहीं है। विदेशी लोग भी राहु-केतु को ग्रह नहीं मानते।
6. यह योग राहु-केतु की अंशात्मक दूरी से टूट जाता है।
7. कालसर्प योग को ज्यादा मानेंगे तो हर दस में नौ कुण्डलियां कालसर्प योग की मिल जाएंगी।

आइए इन सभी तर्कों का हम शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विवेचन करें।

समाधान

होराशास्त्र अ.36 महर्षि बादरायण, महर्षि गर्ग, मणित्थ, बृहत्जातक अ. 12/पृ. 148, सारावली अ. 11/पृ. 154, जातकतत्वम्, ज्योतिषरत्नाकर, जैन ज्योतिष नामक पाश्चात्य ग्रंथ में भी कालसर्प योग का स्पष्ट वर्णन मिलता है। भृगु ऋषि से प्राचीन कोई नहीं-भृगुसूत्र अ. 8/श्लोक 11-12 इस प्रकार है-

पुत्राभावः सर्पशापात् सुतक्षय॥1॥

नागप्रतिष्ठया पुत्र प्राप्ति॥2॥

इससे अधिक और कितने प्रमाण चाहिए? पर प्राचीन ग्रंथ पढ़े कौन?

मैं अभी ताजी घटना कालसर्प योग के बारे में प्रबुद्ध पाठकों को बतलाना चाहूँगा। बद्रीनाथ धाम में एक विशाल ज्योतिष सम्मेलन में कुछ इसी प्रकार की चर्चा कालसर्प योग को लेकर चली।

एक ज्योतिषी ने कालसर्प योग के बारे में कहा कि प्राचीन किसी ग्रन्थ में कालसर्प योग का उल्लेख नहीं मिलता। इस पर मैं केवल इतना ही कहना चाहूँगा कि प्राचीन ग्रन्थों में तो कारयोग, मर्सडिज, स्कॉरपियो अवश्य मिलता हैं। जिसे हमने आधुनिक परिपेक्ष्य में मर्सडिज, स्कॉरपियो, मारुति आदि में परिभाषित कर दिया है, तो क्या ज्योतिष में शोध की कोई गुंजाइश नहीं है। ज्योतिष में नए शोध को क्या हमेशा के लिए ताला लग गया है। नहीं ज्योतिष विज्ञान इतना संकुचित या संकीर्ण नहीं हो सकता कि उसमें शोध/अनुसंधान को कोई मार्ग ही न रहे।

जब पूर्ण सक्षम विज्ञान में आज नए-नए शोध हो रहे हैं, नई-नई मशीनें, यंत्र आ रहे हैं, तो ज्योतिष में नए शोध को कैसे नकारा जा सकता है, यह मेरी समझ से परे है।

प्राचीन भारतीय ऋषियों ने हजारों, लाखों वर्ष पूर्व ज्योतिष के सिद्धांतों की रचना अपने सतत अनुभव, तपस्या व साधना से की, तो हजारों वर्ष पूर्व रचित सिद्धांतों में और आज की परिस्थितियों में कोई अंतर नहीं हैं।

प्राचीन भारतीय ऋषियों ने आई.ए.एस. मंत्री, आई.पी.एस. योग, आई.आर. एस. के आदि उच्च प्रशासनिक योगों के बारे में अलग से किसी सिद्धांत की रचना नहीं की। इसका मतलब यह नहीं कि ऐसा कोई योग जातक की कुण्डली में नहीं होता।

समाधान 2

जो लोग कर्मकाण्ड व पौरोहित्य को नहीं जानते और नहीं मानते? वे

ब्राह्मणेत्तर लोग ही कालसर्प योग का विरोध करते हैं? गणेश पूजा, दुर्गा पूजा, श्राद्ध, यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठज्ञन करना, धर्म व आस्था को विषय है। मूर्तिपूजा के विरोधी व नास्तिक लोग ऐसे कृत्यों का घोर विरोध अनादि काल से करते चले आ रहे हैं पर मन्दिरों में, पूजा स्थलों में, कुम्भ मेलों में फिर भी भीड़ कम नहीं हुई है। मंत्र शक्ति एवं प्रार्थनाओं की शक्ति को सभी धर्म व जातियों ने एक मत से स्वीकार किया है। इसमें विवाद व्यर्थ है। कालसर्प शांन्ति करने से लोगों को आशातीत लाभ हुआ। इसका लिखित दस्तावेज हमारे पास है। दृष्टान्त कुण्डलियों का भण्डार है। पीड़ित लोगों के व्यक्तिगत अनुभवों पर एक पुस्तक अलग से लिखी जा रही है।

ब्राह्मण क्यों विरोध करते हैं?

इन दिनों यह भी देखने में आया है कि ब्राह्मण वर्ग के कुछ लोग कालसर्प योग का विरोध कर रहे हैं। ब्राह्मणेत्तर लोगों का विरोध तो समझ में आता है? पर ब्राह्मण वर्ग ही ब्राह्मण के क्यों खिलाफ हैं, यह समझ के बाहर है? विरोध के लिए कोई भी विरोध कर सकता है। विरोधी की कोई जाति नहीं होती। जहां तक विरोध करने वाले ब्राह्मण की बात है तो स्पष्ट है ये लोग जन्म से ब्राह्मण हैं, कर्म से नहीं। अर्थात् ये लोग कर्मकाण्ड-पूजापाठ एवं पौरोहित्य कर्म के ज्ञाता नहीं होते। इन्हें वैदिक संस्कृति व संस्कृत का ज्ञान नहीं होता। ये लोग अधिकतर सरकारी नौकरी में लगे हुए, आचरण भ्रष्ट होते हैं। कम्प्यूटर इंजीनियर, सिविल इंजीनियर या ब्यूरोक्रेट होते हैं। शौकिया तौर पर ज्योतिष सीख लेते हैं। असली धंधा कुछ और होता है। ऐसे ही सज्जन पारम्परिक ज्ञान के अभाव में, अल्पज्ञता के चलते अपनी व ज्योतिष शास्त्र दोनों की कब्र खोदते हैं। ब्राह्मण कमाते हैं तो कुछ लोगों के पेट में दर्द होता है। पाश्चात्य संस्कृति के पिछलग्गू इन तथाकथित ज्योतिषियों को संस्कृति के विद्वानों से कर्मकाण्डी पण्डितों से, ज्योतिष शास्त्र के वास्तविक उपासकों व कीर्तिवन्त विद्वानों से घोर एलर्जी होती है। इनसे दूरी बनाए रखने में ही बुद्धिमानी है।

समाधान 3

कालसर्प योग की लगभग पांच लाख कुण्डलियों का संग्रह हमारे पास है। ये योग 3456 प्रकार के होते हैं। सभी के फल अलग-अलग हैं। यह योग उन्नति में बाधक है या बड़े लोगों की कुण्डली में नहीं होता ऐसा कहीं नहीं लिखा गया है। जो सज्जन नूतन अनुसंधान योग के महत्त्व को फलित ज्योतिष में अस्वीकार

करते हैं। वो कैसे ज्योतिषी हैं? ऐसे में उनकी खुद की योग्यता पर प्रश्नवाचक चिह्न लग जाता है।

समाधान 4

प्राचीन ज्योतिष ग्रंथों में बालरिष्टयोग, वैधव्ययोग, मारक, मारकेश शस्त्रहन्तायोग, अचानक मृत्युयोग, अपघात, आत्महत्या आदि पर बहुत विचार किया गया है अत: ऋषियों के बारे में अनर्गल प्रलाप मिथ्या है।

समाधान 5

एक ज्योतिषी महोदय ने मुझसे कहा कि राहु-केतु का फिजीकल अपीयरेन्स (भौतिक अस्तित्व) नहीं है, अत: इससे किसी प्रकार का कोई योग नहीं बनता।

मुझे ज्योतिषी महोदय की बात सुनकर हंसी आई कि राहु केतु का यदि भौतिक अस्तित्व (फिजीकल अपीयरेन्स) नहीं है तो फिर सूर्य ग्रहण व चन्द्र ग्रहण कैसे बनते हैं। सूर्य ग्रहण के समय राहु तथा चन्द्र ग्रहण के समय केतु स्पष्ट रूप से आकाश में नंगी आँखों से देखे जा सकते हैं और पूरा विश्व उन्हें देखता है।

राहु-केतु वस्तुत: छाया ग्रह हैं, छाया के रूप में ये हमें सूर्य-चंद्र ग्रहण के दिन आकाश में दिखाई पड़ते हैं।

अब रही बात राहु-केतु से कोई योग नहीं बनने की तो फिर ग्रहणयोग चाण्डाल योग, अंगारक योग का भी कोई अस्तित्व नहीं है क्योंकि यह दोनों योग भी राहु से ही बनते हैं।

ग्रहणयोग, चाण्डालयोग का ही विस्तृत रूप है, कालसर्प योग। ग्रहण योग में चन्द्रमा राहु से पीड़ित होता हैं। चांण्डाल योग में गुरु राहु से प्रताड़ित होता है जबकि राहु-केतु के मध्य सारे ग्रह आ जाने से सारे ग्रह राहु-केतु से प्रताड़ित होते हैं, यही कालसर्प योग है। इस पर विशेष जानकारी के लिए भोजसंहिता 'राहु खण्ड' एवं 'केतु खण्ड' को देखना चाहिए।

ग्रहों के बारे में खगोलशास्त्री अभी भी दिग्भ्रमित

(चेक गणराज्य), 16 अगस्त (एजेन्सियां)। अगर अन्तर्राष्ट्रीय खगोलीय संघ (आईएयू) की महासभा ने गुरुवार को सौरमण्डल के नए प्रस्तावित स्वरूप को अपनी मंजूरी दे दी, तो ग्रहों की संख्या नौ से बढ़कर 12 हो जाएगी। तब एनसाइक्लोपीडिया और पाठ्य पुस्तकों में भी बदलाव करना पड़ेगा।

संघ की ग्रह परिभाषा समिति ने यह प्रस्ताव तैयार किया है, जिस पर गुरुवार को दुनियां भर के ढाई हजार से ज्यादा खगोलीयविदों ने मतदान किया। नौ ग्रहों में से एक प्लूटो का दर्जा घटाते हुए इन 12 ग्रहों को तीन वर्गों में बांटा गया है। खगोलविदों की 'वाचलिस्ट' में इस समय तकरीबन एक दर्जन और पिण्ड हैं, जिनकी कक्षा व द्रव्यमान के बारे में जानकारी मिलने के बाद उनमें से भी कुछ इन वर्गों में शामिल हो सकते हैं।

वैज्ञानिकों की नई परिभाषा - ग्रह वह होगा, जो किसी तारे की परिक्रमा करता हो, पर खुद कोई तारा न हो। उसका द्रव्यमान इतना अवश्य हो कि वह अपने गुरुत्व के सहारे गोलाकार रूप में मौजूद रह सके।

1. पहला क्लासिकल वर्ग - बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति। शनि, यूरेनस (वरुण) और नेपच्यून (कुबेर)।
2. दूसरा प्लूटोन वर्ग - प्लूटो, शेरन और 2003 यूवी 313
3. तीसरा वर्ग - अकेला सीरेज, सीरेज प्लूटों का उपग्रह है।
4. अब इन पर नजर-सेडना, ओरकस, क्वाओर तथा 2003 ईएल 61 और क्षूद्र ग्रह-वेस्टा, पलास व हाइजिया।

खगोल वैज्ञानिक हमेशा गलत ही साबित रहे

खगोल वैज्ञानिकों ने सौरमण्डल में एक ग्रह प्लूटो (यम) को भले ही कम कर दिया हो तथा अन्य चार ग्रह भले ही बढ़ा दिए हों पर भारतीय गणनाओं और फलादेश पद्धति पर इसका रत्ती भर भी असर नहीं पड़ेगा। अन्तर्राष्ट्रीय वास्तु एसोसिएशन के संस्थापक अध्यक्ष व चार सौ ज्योतिषशास्त्र की पुस्तकों के यशस्वी लेखक डॉ. भोजराज द्विवेदी ने बताया कि भारतीय ज्योतिषशास्त्र में पृथ्वी को लग्न के रूप में मानकर सूर्य, चन्द्र, राहु, केतु सहित नवग्रहों को मान्यता प्रदान की तथा मानव जीवन पर पड़ने वाले उनकी ग्रह-राशियों के प्रभाव को सूक्ष्मता से अध्ययन-अनुसंधान एवं व्यवहारिक परीक्षणों के धरातल पर परिमार्जित किया। जिसका ज्ञान पाश्चात्य ज्योतिष एवं खगोल वैज्ञानिकों को अंश मात्र भी नहीं है। यही कारण है कि भारत से जब कोई विद्वान ज्योतिषचार्य विदेश में पहुँचता है तो बड़े से बड़े पाश्चात्य ज्योतिषी लाईन लगाकर उनसे मिलने के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा करते हैं।

गत सौ वर्षों से खगोल विज्ञानी ग्रहों के नाम पर लोगों को दिग्भ्रमित कर रहे हैं। पहले वे किसी पिण्ड को ग्रह का दर्जा दे देते हैं, फिर यह दर्जा छीन

भी लेते हैं। प्रकृति के साथ उनकी यह बचकाना हरकत वस्तुतः उनकी कम अक्ली का प्रमाण नहीं तो और क्या है? जिन्होंने ग्रहों के परिभ्रमण जैसे गम्भीर विषय को हल्के-फुल्के मजाकिया अंदाज में पेश किया है।

एक और तथ्य उल्लेखनीय है कि भारतीय ज्योतिष के गणित एवं फलादेश सिद्धांतों में ग्रह-नक्षत्र, नक्षत्र-चरण ज्योतिष में वर्णित नौ ग्रह जब सौरमण्डल में भिन्न-भिन्न नक्षत्रों एवं, नक्षत्र चरणों में होते है। तो उनमें विशेष रश्मि-समूह का स्पन्दन होता है, उनके विशेष प्रभाव, विशेष ढंग से परिलक्षित होते देखे गए हैं। इनका अनुसंधान हजारों-हजारों वर्षों पूर्व दिव्य द्रष्टा ऋषियों ने किया। जिस पर अत्याधुनिक परिमार्जन व अनुशीलन आज तक निर्बाध गति से होता चला आ रहा है। अतः इस परम्परा में सैकड़ों-हजारों की संख्या में फलादेश सिद्धांत पर हमारे ऋषियों के ग्रन्थ उपलब्ध हैं, परन्तु इन आधुनिक खगोलशास्त्रियों के ग्रह सौरमण्डल के नक्षत्र-वलय व रश्मि-पिण्डों को प्रभावित नहीं करते, न ही इस विषय में उनका कोई साहित्य ग्रन्थ संकलन, अनुभव प्रकाशित है। तिथि गणना एवं पंचांग गणित में आज भी भारत का नाम समग्र विश्व में सबसे अग्रगण्य है, अपितु सच्चाई यह है कि खगोलशास्त्रियों का आज दिन तक का इतिहास बताता है कि इन्होंने केवल मानव सभ्यता को अनर्गल प्रलाप के द्वारा डराया है, धमकाया है, लोगों को भयग्रस्त किया है तथा इनकी सारी की सारी भविष्यवाणियां गलत ही साबित हुई हैं। जिनका पूरा रिकॉर्ड डायमण्ड राशि भविष्य 2000 में दिल्ली से प्रकाशित है।

समाधान 6

अंशात्मक युति से यह योग टूटता है, ऐसा उल्लेख प्राचीन ग्रन्थों में नहीं है। फिर भी ज्योतिष शास्त्र में नए अनुसंधान करने के लिए मार्ग अवरुद्ध नहीं है। नए अनुसंधान में अंशात्मक युति तो दूर कोई एक ग्रह भी इनकी पकड़ से दूर निकल जाए तो आंशिक कालसर्प योग बनता है और उसका भी दुष्प्रभाव जातक के जीवन में पड़ता है। जिसका प्रभाव खुद जातकों ने स्वीकार किया है पर यह प्रभाव पूर्ण कालसर्प योग में आधा ही अनिष्ठ कारक होता है।

समाधान 7

यह आरोप भी व्यर्थ है। यह बात सही है कि ज्यादा दुःखी, नींद न आने वाले, सन्तप्त, प्रतिपल अशुभ की आशंका से ग्रसित व दुःस्वप्न से पीड़ित,

नकारात्मक सोच एवं मानसिक चिन्ता से ग्रसित लोगों की जन्म कुण्डली में कालसर्प योग बहुतायत में पाया जाता है। मैं चादनारायण पारीख, डॉ. एम. कुरसीजा, पं. रघुनन्दन प्रसाद गौड, पं. घनश्यामलाल स्वर्णकार, पं. श्रीकृष्ण शर्मा एवं अन्य सभी विद्वानों का आभारी हूँ जिन्होंने इस योग के बारे में सकारात्मक रुख अपनाया है।

कालसर्प योग केवल पितृदोष ही नहीं

जातक के जीवन की अन्य महत्त्वपूर्ण घटनाओं को भी बताता है

कालसर्प योग एक ऐसा योग है, जिसके कारण फलित ज्योतिष की सत्यता अकाट्य रूप में प्रमाणित हुई है। यह योग जातक के जीवन के अन्य महत्त्वपूर्ण एवं गोपनीय रहस्यों को भी उद्घाटित करता है। हमारे नवीन शोध व अनुसंधान से निम्न तथ्य उद्घटित होकर सामने आए हैं।

पितृदोष वाली कुण्डली

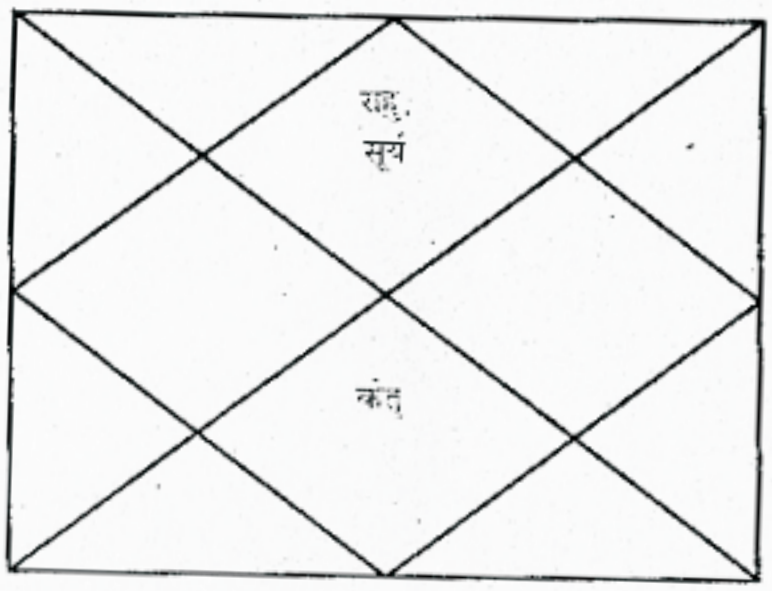

1. **राहु+सूर्य** - कुण्डली में कालसर्प योग है परंतु राहु या केतु के साथ यदि सूर्य हो तो जातक पितृदोष से ग्रसित होगा। उसके पूर्वज किसी न किसी कारण से जातक से नाराज या असंतुष्ट अवश्य ही रहेंगे। जातक ने कोई वचन भंग किया होगा, किसी के साथ विश्वासघात किया होगा, जाने-अनजाने में मान्यताएं अधूरी या अपूर्ण रही होंगी। ऐसे में अन्य विधियों व शांति उपायों के साथ जातक पिता की पूर्ण सेवा करे। पिता न हो तो पिता तुल्य वृद्ध रिश्तेदार की सेवा-सुश्रुषा करे। पूर्वजों का श्राद्ध-तर्पण विधि-विधान से करे।

मातृदोष वाली कुण्डली

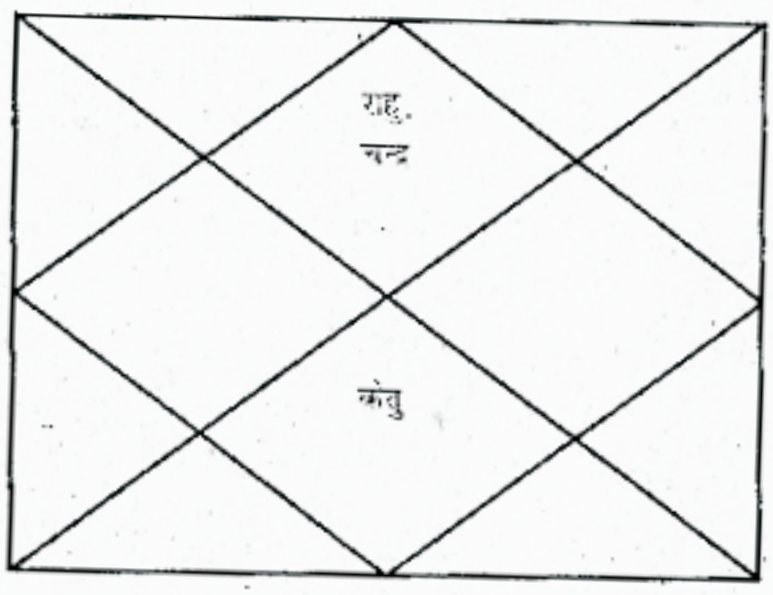

2. **राहु+चंद्र** - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि चन्द्रमा हो तो जातक मातृदोष से ग्रसित होगा उसने

अपनी माता का दिल कहीं न कहीं से दुखाया होगा माता से बेवफाई, पत्नी द्वारा माता की उपेक्षा भी सम्भव है। देवी की मान्यताएं या किसी महिला के साथ विश्वासघात भी सम्भव है। ऐसे में अन्य विधियों के साथ जातक को अपनी माता की पूर्ण सेवा-सुश्रुषा करनी चाहिए। माता न हो तो माता तुल्य वृद्ध महिला सासु, बुआ, मासी, बड़ी बहिन की सेवा करके आशीर्वाद ले। माता का साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्व विधि विधान से करे।

भातृदोष वाली कुंडली

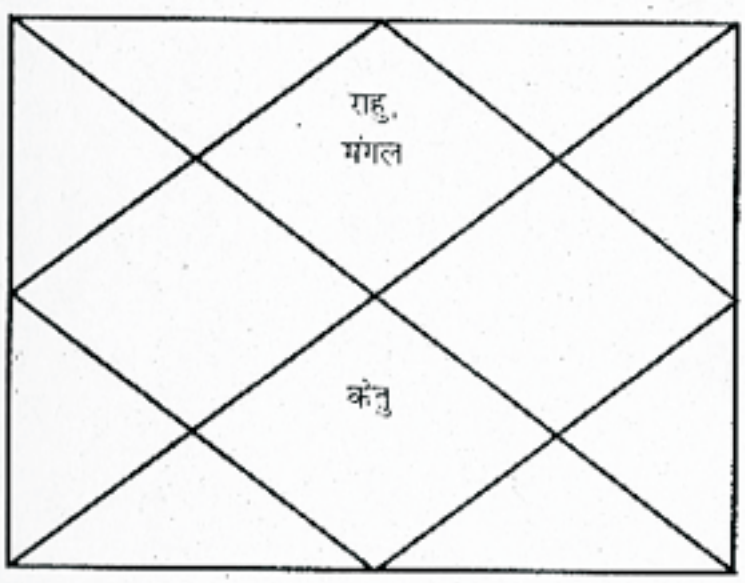

3. राहु+मंगल - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि मंगल हो तो जातक भातृदोष से ग्रसित होगा। उसने अपने भाई के साथ धन का हरण किया होगा, भाई के साथ बेवफाई, रूखा व्यवहार या भाई के प्रेम व त्याग की उपेक्षा की होगी। ऐसे में भाई की सेवा-सुश्रूषा करके, उसका आशीर्वाद लें। भाई न हो तो भाई के समान ही कुटुम्बीजनों का आशीर्वाद लें। भाई का साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्ण विधि-विधान से करें।

ननिहाल दोष वाली कुंडली

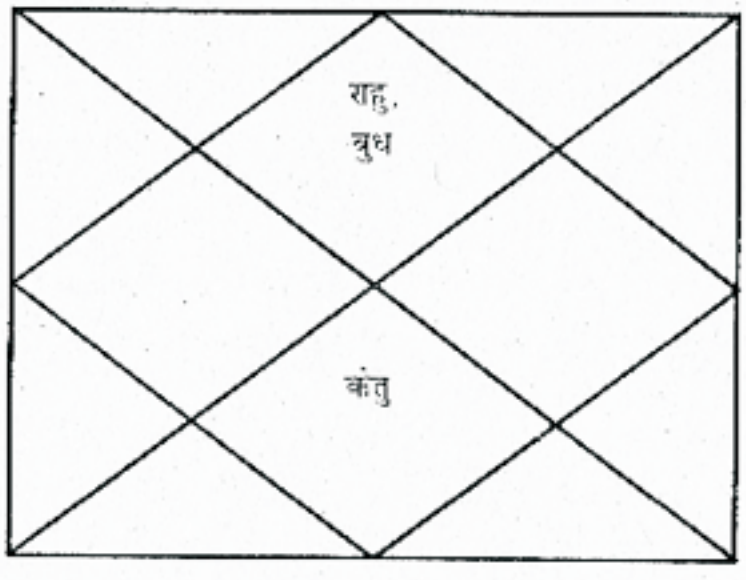

4. राहु+बुध - जन्मकुण्डली में कालसर्प योग हो परन्तु राहु या केतु के साथ यदि बुध हो तो जातक मामा, नाना या ननिहाल के दोष से ग्रसित होगा। छोटी बड़ी बहिन या बुआ का दिल जरूर दुखाया होगा। ऐसे में कालसर्प योग की शांति के साथ-साथ नाना-व मामा की सेवा कर आशीर्वाद प्राप्त करें। यदि नाना न हो तो उसका साम्वत्सरिक श्राद्ध व तर्पण पूर्ण विधि-विधान व श्रद्धा पूर्वक करें।

गुरु दोष वाली कुंडली

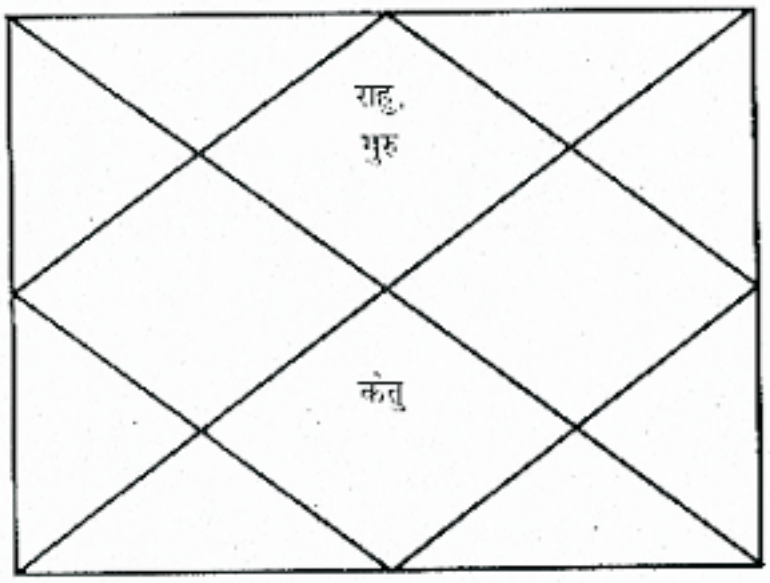

5. **राहु+बृहस्पति** - जन्म कुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तो जातक गुरुदोष से ग्रसित होगा जातक ने अपने गुरु दीक्षा गुरु शिक्षा गुरु, व्यवसाय गुरु, संस्कार गुरु या पूज्य ब्राह्मण का कहीं न कहीं अपमान उपेक्षा का प्रदर्शन जरूर किया होगा। ऐसे में कालसर्प योग की शांति के अलावा गुरुपूर्णिमा पर, शिक्षक दिवस आदि दिवस पर अपने गुरुजनों का सम्मान करें, उन्हें भोजन वस्त्र दक्षिणा व विविध उपहारों से संतुष्ट कर, उनका आशीर्वाद प्राप्त करें तो निश्चित रूप से जातक की उन्नति व विकास का काम द्रुतगति से होगा।

पत्नी दोष वाली कुंडली

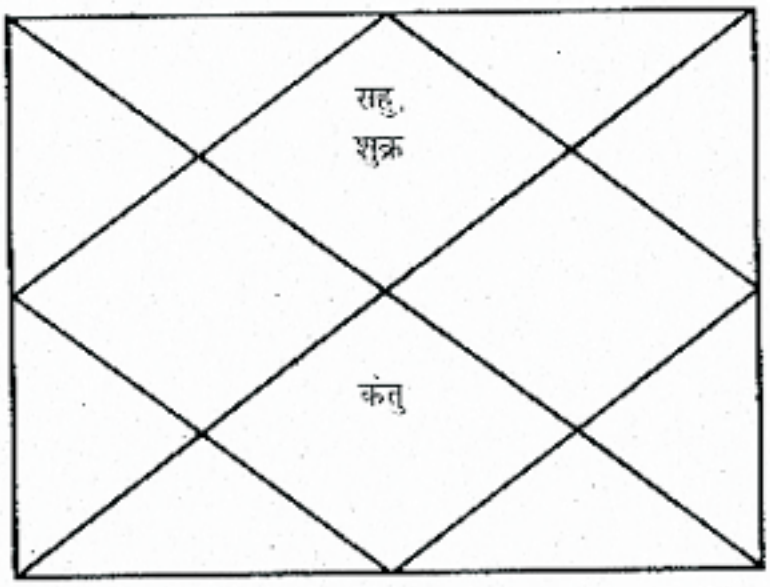

6. **राहु+शुक्र** - जन्म कुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तथा राहु या केतु के साथ यदि शुक्र हो तो जातक पत्नी दोष से ग्रसित होता है जातक ने अपनी पत्नी के साथ विश्वासघात किया होगा, उसका कहीं दिल दुखाया होगा-ऐसे में कालसर्प योग शांति के साथ-साथ पत्नी के साथ सद्व्यवहार करें। पत्नी न हो तो उसका साम्वत्सरिक श्राद्ध-तर्पण पूर्ण विधि-विधान व श्रद्धा के साथ करें।

प्रेत दोष वाली कुंडली

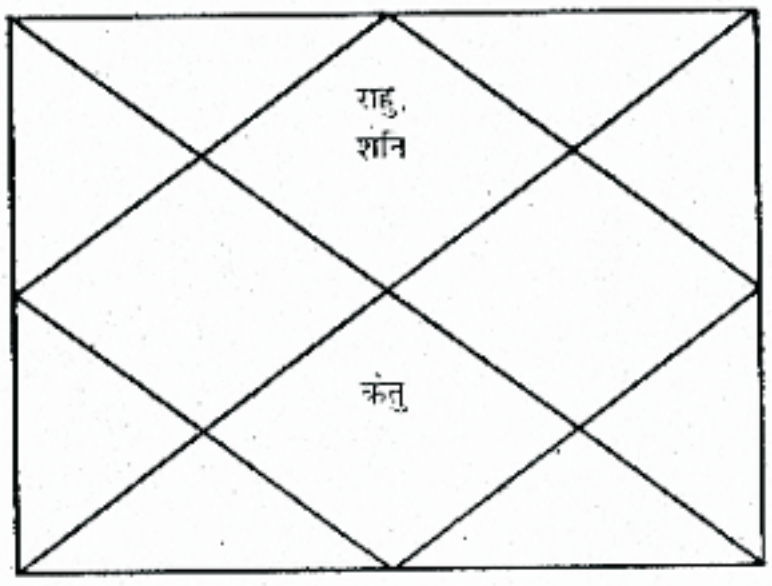

7. **राहु+शनि** - जन्मकुण्डली में यदि कालसर्प योग हो तथा राहु या केतु के साथ यदि शनि हो तो जातक ने अपने नीचे तबके के किसी व्यक्ति के साथ, नौकर या

शूद्र वर्ग के साथ दुर्व्यवहार करने से दुराशीष का शिकार होगा। ऐसे में अन्य विधियों व उपायों साथ-साथ गरीबों को, कोढ़ी व अपंग व्यक्तियों को भोजन खिलाकर आशीर्वाद लें। अनाथालय एवं वृद्धाश्रम में अन्न-धन-वस्त्र इत्यादि का दान करें। अतः कालसर्प योग की विधि कराते समय इन सभी बातों पर गम्भीरता से ध्यान देना चाहिए।

क्या नासिक व अन्य तीर्थ-स्थलों पर कराया गया कालसर्प सही नहीं होता

इस वर्ष 2006 जोधपुर श्रावण मास में अद्‌भुत घटना घटित हुई। 108 रुद्रपाठी विद्वान् जोधपुर में बाहर से बुलाए गए। एक महीने तक (पूरे श्रावण मास) अनवरत रुद्रीपाठ चलता रहा। श्रावण के चारों सोमवार को सहस्रघट अभिषेक किया गया। आशुतोष भगवान शिव को प्रसन्न करने हेतु उच्चघोष में हर-हर महादेव के स्वर में, घनघोर मन्त्रोच्चार में जोधपुर के वायुमण्डल को कम्पायमान कर दिया। पर यह पहला अवसर था, श्रावण के इन चारों सोमवार को जोधपुर में एक बूँद वर्षा नहीं आई। जोधपुर के आसपास 35 किलोमीटर के रेडियेटर में पाली, रौहठ, जालोर, नागौर वर्षा में तरबदर थे, पर जोधपुर में सूखा पड़ा था। आम व खास लोगों में इस कड़ीपाठ की चर्चा थी। मेरे पास भी श्रद्धालु लोग आए कि जोधपुर में इतने तीव्र अनुष्ठान के बाद वर्षा क्यों नहीं? वर्षा कब होगी? जोधपुर के आस-पास हो रही है, जोधपुर में क्यों नहीं? मैं भी मौके पर अनुष्ठान स्थल पर गया। देखा सभी लोगों का उच्चारण अशुद्ध था। वर्षा किस मन्त्र से होती है, इसका किसी को ज्ञान नहीं।

मैंने एक वृद्ध रुद्रीपाठी से पूछा भाईसाहब यह जो मन्त्र जिस स्वर से आप उच्चारित कर रहे हैं, गलत है। इससे इसका अर्थ बदल जाता है। वे सज्जन मुझ पर कुछ क्रोधित हुए बोले-अर्थ कुछ भी हो? हम लोग बड़ी श्रद्धा व आस्था से पाठ कर रहे हैं। भगवान तो भाव के भूखे होते हैं।

मैंने कहा - तब तो आप मन्त्र की जगह भाव विभोर होकर भगवान को गालियां देने में भी समर्थ हैं। अशुद्ध मन्त्रोच्चार, विधि की अल्पज्ञता में इतने वृहद् स्तर पर किए गए रूद्रीपाठ का फल नहीं मिला। साथ में आए मेरे मित्रों ने पूछा आखिर वर्षा कब होगी? मैंने कहा जब यह अनुष्ठान खत्म हो जाएंगे। ये लोग जोधपुर से चले जाएंगे तब।

महान आश्चर्य! अनुष्ठान का एक माह समाप्त हुआ। रूद्रपाठ लोग गए एवं रक्षाबन्धन श्रावणी पूर्णिमा को जोधपुर में जमकर बारिश हुई, घटाएं उमड़-घुमड़ कर बरसीं। 5 इंच बरसात रिकॉर्ड की गई। बांधों में पानी आ गया। जोधपुर में तब मानसून की शुरुआत नित्य प्रति कुछ न कुछ अंशों में होती रही।

इस दृष्टान्त से तात्पर्य यह है कि कहीं मन्त्रोच्चार के अभाव में केवल श्रद्धा व आस्था से कालसर्प विधि का फल नहीं मिलता। कालसर्प शान्ति विधि का सांगोपांग ज्ञान अच्छे-अच्छे विद्वानों को नहीं है। कई विद्वानों को इस विधि का ज्ञान भी है पर उनके पास समय का अभाव रहता है।

नासिक इत्यादि बड़े तीर्थ-स्थलों पर स्थान की महिमा तीर्थ की महिमा तो है पर पढ़ने की विधि का ज्ञान नहीं। फिर वे लोग दस-पन्द्रह मिनट में सारी विधि करा देते हैं क्योंकि उनके पास समय का अभाव सदैव बना रहता है। यजमानों की लाईन लगी रहती है।

फिर यह भी बात है उनके पास व्यवसासिक पद्धति है। नवनागों की नौ अलग-अलग धातुओं में सर्पों की मूर्तियां बनी होती हैं। जिसे वे यजमान को देते हैं। उनके चार्ज लेते हैं। उन मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा कराते हैं तथा जलकुण्ड में विसर्जित कराते हैं। उन मूर्तियों को जलकुण्ड से हाथोंहाथ वापस निकाल लेते हैं। आधा घंटे बाद दूसरा यजमान थामेगा। यही मूर्तियां पुनः काम में ली जाएंगी। वो ही नारियल, वही यज्ञोपवीत, वही सुपारी वही पूजा की सामग्री। दिन भर यही क्रम प्रत्येक यजमान के साथ दोहराया जाएगा। एक ही नारियल पर अनेक यजमानों का संकल्प कैसे काम करेगा। क्यों कर करेगा, समझ के बाहर है। उच्छिष्ट सामग्री कैसे फलीभूत होगी? मन्त्रोच्चार एवं सांगोपांग विधि-विधान तथा ग्रहमुख हवन प्रक्रिया के अभाव में पूजा कैसे सफल होगी?

बड़े तीर्थों में रहने वाले व्यावसायिक पण्डे आम व्यक्तियों से ज्यादा नास्तिक होते हैं। ईश्वर से नहीं डरते। यहां तक पूरा संकल्प तक नहीं बोल सकते? जिस गंगाजल को हम परम पवित्र मान कर आचमनी लेते हैं। उसी में गुदा-प्रक्षालन करते हैं। गन्दे कपड़े धोते हैं। गटर की गन्दगी छोड़ते हैं। अधजली लाशें फेंकते हैं। सभी कर्म आँखों से देखते हैं, तो घृणा हो जाती है। बड़े तीर्थों की महिमा ही हमें वहां तक खींच ले जाती है। वहां रहने वाले पण्डों-पुजारियों की आकर्षक वेश-भूषा हमें सम्मोहित करती है। पर यह जरूरी नहीं कि उनके द्वारा कराया गया पूजन सही हो। दिन को बहुत बड़े भक्त, सिद्ध, साधु व सज्जन दिखाई देने वाले पण्डे-पुजारी, रात को बीड़ी-सिगरेट, शराब पीते हुए, व्यभिचार करते हुए दिखाई देते हैं। जिनका आचरण शुद्ध नहीं। जो स्वयं इष्टबली नहीं। जिन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं। जो पूजा-पाठ, कर्मकाण्ड में निष्णात नहीं। उनके द्वारा की गई पूजा-अनुष्ठान कैसे सफल हो सकते हैं? केवल स्थान विशेष की महिमा अनुष्ठान को सफल नहीं करती।

हमारे पास अनेक जिज्ञासु सामूहिक शिविरों में आते हैं। शिकायत करते हैं हमने नासिक में तीन बार विधि कराई, हमने महाकाल, उज्जैन में विधि कराई, पर कुछ भी फायदा नहीं हुआ। अब क्या कहें? इलाज किसी नासिक वाले डॉक्टर से कराओ तथा उसकी शिकायत जोधपुर में स्थित अन्य डॉक्टर को करेंगे तो जवाब यही मिलेगा जिससे इलाज कराया, ऑपरेशन कराया, जहां आपने खर्चा किया, उसी से जाकर शिकायत करो कि हमें लाभ क्यों नहीं हुआ? हाँ! जोधपुर में यदि विधि तीन बार की गई तो कितना प्रतिशत लाभ हुआ या नहीं हुआ? उसका आंकलन करना हमारा नैतिक दायित्व है। ध्यान रहे एक वर्ष में तीन बार निरन्तर पूजा करने पर ही लाभ की प्रत्यक्ष अनुभूति होती है। इसमें अधिक अन्तराल होने पर पूजा निष्फल चलीं जाती है। वापस शून्य (जीरो) से गिनती करनी पड़ती है।

ईश्वर किसी विशेष स्थान में छिपा हुआ नहीं है। ईश्वर सर्वत्र व्याप्त है, व्यापक व विभु है। मन्त्रों के उच्चारण एवं मन्त्र प्रयोग की अनुष्ठान विधि के रहस्य को जानने वाले विद्वान् ईश्वरीय अनुकम्पा व दैविक शक्ति को कहीं भी प्रकट करने की सामर्थ्य रखते हैं। इसके लिए विधि प्रधान है। नासिक, महाकाल आदि स्थान विशेष गौण है। स्थान की पवित्रता, पर्यावरण की शुद्धता एवं एकान्त प्रियता इस विधि की सफलता की सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है।

कालसर्प योग काम नहीं कर रहा है?

एक दो बार बड़ा विचित्र अनुभव देखने में आया कि एक सज्जन की कुण्डली में पूर्ण कालसर्प योग था परन्तु कालसर्पजनित दोष का नितान्त अभाव उसके जीवन में था। सज्जन की उम्र लगभग 38 वर्ष की थी। वे सज्जन अपने प्रगति की शेखी बगार रहे थे। कालसर्प की हंसी उड़ा रहे थे, जबकि उनके दुर्दिनों की शुरुआत मात्र चार महीने बाद होने वाली थी। उस सज्जन का 'मकरलग्न' था। लग्न में मंगल उच्च का, स्वगृही शनि के साथ था। मंगल की दशा समाप्त होने में 4 माह बाकी थे, राहु की महादशा लगने वाली थी। लगते ही आकाश के बादशाह जमीन पर आ गए। शेयर बाजार में चार करोड़ का झटका लगा। लम्बे-चौड़े कृषि फार्म पर भूमाफिया ने कब्जा कर लिया। मारपीट हुई अंग-भंग हुआ। शेष जीवन कोर्ट-कचहरी के चक्कर में उलझ गया।

व्यवसायिक ज्योतिषियों के पास ऐसे केस आते रहते हैं। कई बार जातक की कुण्डली में चार-चार ग्रह उच्च के स्वगृही हैं। हम योग मालव्ययोग, रचक योग, करोड़पति योग अन्य विशिष्ट प्रकार के राजयोग मुखरित हैं पर जातक व्यवहारिक धरातल पर फकीर है। आर्थिक तंगी में जी रहा है। कहाँ गया राजयोग का प्रभाव?

कालसर्प विधि कराने से लाभ

1. नाग पूजा से होता है विष व्याधियों का शमन
2. ज्योतिष में पंचमी तिथि का स्वामी सर्प को ही माना गया है। विष्णुधर्मोत्तपुराण में आश्लेषा नक्षत्र का स्वामी भी सर्प को कहा गया है-आश्लेषा सर्पदैवत्या (प्रथम खण्ड 83,15)। लोक मान्यताओं के अनुसार जो भी व्यक्ति नाग पंचमी का व्रत कर नागों को दूध पिलाता है, उसे अपने जीवन में कभी सर्पदंश का भय नहीं रहता है। नागपंचमी के दिन अगर नाग की पूजा की जाए तो कालसर्प योग की पीड़ा, सर्पदंश भय से मुक्ति, सर्पश्राप से मुक्ति मिलती है।
3. नागपूजा से शिव एवं श्रीविष्णु दोनों की कृपा प्राप्त होती है।
4. डरावने सपने आने बंद हो जाते हैं।
5. हिंदू मान्यताओं के अनुसार सर्प या नाग को कभी नहीं मारना चाहिए। उनकी हमेशा पूजा करनी चाहिए। नाग पंचमी के दिन हनुमानजी की कृपा से भी सर्पश्राप (कालसर्प योग) की शांति होती है। जब भगवान राम और लक्ष्मण को मेघनाद ने नागपाश में बांध दिया था, तब शंकर के ग्यारहवें अवतार हनुमान ने ही उनको नागपाश से मुक्त करवाया था। इसलिए इस दिन हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ भी किया जाता है।
6. घर में सांप बहुत आते हों तो तुलसी का पौधा (ब्रह्मस्थान) लगावें।
7. सर्पगन्धा औषधि लगाएं। मान्यता है कि नेवला सर्प-संहार के बाद इसी औषधि का सेवन कर अपने को निर्विष करता है।
8. घर में मोरपंखों को श्रीकृष्ण की ऐसी तस्वीर के सामने रखें जिसमें भगवान मोरमुकुट धारण किए हों। इस तस्वीर के सामने 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय' महामंत्र का जाप करना चाहिए।
9. कालसर्प शान्ति विधि से जन्मकुण्डली गत अनिष्ट ग्रहों की शान्ति होती है तथा प्रतिकूल ग्रह अनुकूल फल देने शुरु हो जाते हैं क्योंकि इस विधि में नवग्रहों का आह्वान, प्रतिष्ठा एवं हवन होता है।
10. कालसर्प शान्ति विधि से पितृदोष की शान्ति होती है।
11. कालसर्प शान्ति विधि में मातृ-शक्तियों का आह्वान होने से देवी शक्तियों की गुप्त ताकत आपको हर प्रकार के अनिष्ट से बचाती है।

12. इस विधि में नथमों की पूजा एवं उनका हवन होने से गण्डमूल जन्म नथम दोष शान्त हो जाते हैं।
13. कालसर्पविधि शान्ति में अमावस्या जन्म दोष की भी शान्ति होती है। सूर्य व चन्द्र जब एकचित्र होते हैं तो दोनों का तेज नष्ट हो जाता है उसे ज्योतिष की भाषा में अमावस्या कहते हैं। ज्योतिषशास्त्र के अनुसार अमावस्या के दरिद्री होता है फिर वह चाहे इन्द्र ही क्यों न हो। (शक्रस्यापि श्रियं हरेत्) यदि अम में जन्म हो तो जातक के साथ-साथ पिता को भी निर्धनता आती है। अमावर पशु-पक्षी हो वह इन्द्रियों की पीड़ा से युक्त, बलरहित एवं मानसिक रूप से परेशान ऐसा प्राचीन शास्त्रों में सर्वमान्य लोकोक्ति है।

मातृपितदु:खतप्तः सूर्येन्द्वोरुदयंसंस्थ्योर्मनुजः।
मानसुतविभवहीनः परिभूतो जायते दु:खी॥ - सारावत

अर्थात् ऐसा जातक माता-पिता के दु:ख से दु:खी, पुत्र-ऐश्वर्य सम्मान से हीन, पीड़ित व दुखी है। शौनक ऋषि कहते हैं-

इत्थं संजायते यस्तु, तस्य मृत्युर्न संशयः। व्याधिपीड़ा न दारिद्रयं शोकश्चत शान्ति तेषां प्रवक्ष्यामि, नराणां हितकाम्यया। यस्मिन्ननृक्षे विशेषेण ग्रहणं।

अर्थात् ऐसे जातक के परिवार में दरिद्रता, शोक कलह, मृत्यु का भय, पीड़ा व रोग का प्रकोप * समय बड़ा कष्ट रहता है। जातक के माता-पिता चिन्तित रहते हैं।

चूंकि कालसर्प शान्ति विधि अमावस्या को ही होती है जिससे अमावस्या-जन्म दोष समाप्त हो जाते हैं।

14. कालसर्प शान्ति विधि में विशिष्ट संकल्प करने पर 'ग्रहण-जन्म' दोष भी नष्ट होते हैं। इस अवसर पर किए गए प्रायश्चित स्नान व औषधपूर्ण मन्त्र-स्नान से सभी प्रकार के ग्रह-दोष व अनिष्ट की शान्ति होती है।
15. एक वर्ष में तीन बार लगातार पूजा विधि कराने में कालसर्प जनित दोष से मुक्ति मिल जाती है। इसके चमत्कारी फल अनेक सज्जनों ने अपने जीवन में देखे हैं। नि:संतान दम्पतियों को पुत्र हुए हैं। कुंवारे लड़के-लड़कियों को योग्य वधू व वर की प्राप्ति हुई है। बेरोजगारों को अच्छी नौकरी मिली है। ऐसे सैकड़ों लिखित पत्र हमारे पास हैं, जिन्होंने निष्ठापूर्वक कालसर्प विधि कराई, सामूहिक शान्ति विधि में उत्साहपूर्वक भाग लिया और अनुकूल परिणामों की प्राप्ति हुई। प्रति अमावस्या को हमारे संस्थान द्वारा केवल

लागत मूल्य में जनकल्याण व परोपकार की भावना से सामूहिक कालसर्प शान्ति के शिविर वैदिक विद्वानों के सानिध्य में लगाए जाते हैं। उन शिविरों में अनेक शिविरार्थी अपना सकारात्मक अनुभव सुनाते हैं। ऐसे-ऐसे आश्चर्य होते हैं कि लोग सुनकर, समझ कर, देखकर दंग रह जाते हैं। ईश्वरीय कृपा का कोई अन्त नहीं। यदि सभी सज्जनों की आपबीती कथा व अनुभवों की लिपिबद्ध कृतियों को प्रकाशित किया जाए तो एक वृहद् ग्रन्थ की रचना अलग से करनी होगी।

16. कालसर्प विधि की शान्ति के बाद लोगों का मानसिक तनाव कम हो जाता है।
17. कालसर्प विधि की शान्ति के बादं बीमार लोगों को रोग निवृत्ति हेतु दी गई दवाएं आश्चर्यजनक रूप से काम करने लगती हैं।
18. सबसे बड़ी राहत की बात यह है कि शिविरार्थी सज्जनों को विशिष्ट शान्ति व सन्तोष की अनुभूति होती है।

प्रार्थना में छिपी है सफलता की अनन्य शक्ति

प्रार्थना आत्मा का संगीत है। आत्मा को परमात्मा का प्रकाश देने वाली प्रार्थना है। जैसे शरीर के लिए भोजन आवश्यक है, वैसे ही प्रार्थना भी एक आध्यात्मिक भोजन है।

इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं जब प्रार्थना के माध्यम से अकल्पनीय चमत्कार हुए।

1. द्रौपदी ने प्रार्थना की तो उनका चीर असीमित हो गया।
2. सीता ने प्रार्थना की और देखते-ही-देखते अग्नि की ज्वालाएं शीतल हो गईं।
3. मीरा ने प्रार्थना की और हलाहल विष अमृत में बदल गया।
4. सुभद्रा ने प्रार्थना की और चम्पा के बन्द तार एक क्षण में खुल गए।
5. सुदर्शन ने प्रार्थना की तो मृत्युदायक शूल सिंहासन में बदल गया।
6. निरन्न ब्राह्मण की दरिद्र अवस्था को देखकर आद्य शंकराचार्य ने द्रवित होकर भगवती लक्ष्मी से प्रार्थना की और देखते-ही-देखते ब्राह्मण के घर के आंगन में सुवर्ण आंवलों की वर्षा हो गई।
7. मनुष्य तो क्या जानवर भी प्रार्थनाओं की चमत्कारी शक्ति से प्रभावित हुए 'गजेन्द्रमोक्ष' इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।
8. बाबर ने मरणासन्न अपने पुत्र हुमायुँ के लिए प्रार्थना की प्रभु मेरे प्राण ले लो हुमायुँ को बचा लो। हुमायुँ तत्काल ठीक हो गया और बाबर के प्राण पखेरू उड़ गए।

9. सम्राट अकबर की संतान नहीं थी। पुत्र कामना हेतु रेगिस्तान की तपती दोपहर में नंगे पांव अजमेर गए प्रार्थना की और पुत्र हुआ।
10. ऐसे ही ईसामसीह ने करुणा विगलित प्रार्थनाओं के माध्यम से अनेक असाध्य रोगियों को ठीक कर दिया।
11. प्रार्थना की फलश्रुति अनन्त है। प्रार्थना में छिपी अलौकिक शक्ति को हर धर्म, जाति व समुदाय ने स्वीकार किया है। शास्त्रों में कहा गया है कि प्रार्थना सदैव निष्काम भाव से करनी चाहिए। परोपकार के लिए, दूसरों के हित के लिए करनी चाहिए तभी सही अर्थों में प्रार्थना की सुगन्धि मिलती है।
12. यदि मनुष्य प्रार्थना का सही प्रयोग करना सीख जाए तो शीघ्र ही प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बनाया जा सकता है। परिस्थितियां भाग्य से मिलती हैं। अच्छी परिस्थितियां सौभाग्य का लक्षण हैं। बुरी परिस्थितियां दुर्भाग्य का लक्षण हैं। दुर्भाग्य जब जन्म लेता है तो मनुष्य को विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। भाग्य आपको जो कुछ भी दे, वह महत्त्वपूर्ण तो है, लेकिन बहुत महत्त्वपूर्ण नहीं है। उससे भी बड़ी बात तो यह हो सकती है कि आपको भाग्य से जो मिल रहा है उसे पाने के बाद उसे चुनौती देते हुए अपने आपको ऊंचा उठाने में संलग्न होइए। हार मानकर नहीं बैठिए। अपने पुरुषार्थ में कमी नहीं आने दीजिए।

लेकिन पुरुषार्थ में बल तब आएगा, जब पुरुषार्थ के साथ प्रार्थना जुड़ेगी। आगे बढ़ने का संकल्प मन में दोहराइए, लेकिन साथ ही भगवान की प्रार्थना और साधना भी जरूर कीजिए। सुमिरन कीजिए। भगवान की कृपा हो और अंदर की संकल्प शक्ति जागी हो तो मनुष्य बड़े से बड़ा कार्य भी कर सकता है।

दुनिया के सहारे बहुत देर तक नहीं टिकते। सबसे बड़ा सहारा भगवान का है। भगवान का सहारा हम केवल अनुभव करते हैं, क्योंकि भगवान दिखाई तो देते नहीं, लेकिन अनुभव कीजिए कि जिस समय आपके अपनों ने आपका साथ छोड़ दिया और आप अकेले खड़े रह गए तो उस समय वह कौन सी शक्ति थी, जिस शक्ति ने आपको बुझने नहीं दिया। एक बात जरूर होती है, बार-बार श्रद्धाभाव से पुकारने से, अंत:करण को निर्मल करने से एक विशेषता जरूर आ जाती है आपका अंत:करण निर्मल हुआ तो याद रहे कि जिस व्यक्ति की संकल्पशक्ति प्रबल होगी, वह आदमी नियम से कार्य पूरा करेगा।

आपके अंदर से स्वर निकलते हैं तो वह प्रार्थना है। प्रार्थना चमत्कार करती है। जब भी इंसान कोई डॉक्टर, वकील, इंजीनियर या शूरवीर थक जाता है तो फिर यही कहता है कि बस अब दुआ (प्रार्थना) करो। ग्रंथों में कहा गया है कि उन्नति के लिए प्रार्थना और पुरुषार्थ बहुत आवश्यक है।

बिना प्रार्थना के परिश्रम सफल नहीं होता और बिना परिश्रम के प्रार्थना पूर्ण नहीं होती। दोनों का संतुलन बहुत आवश्यक है।

13. प्रार्थना में सकारात्मक शक्ति का ऊर्जा स्रोत है, जिसमें जीवन की सार्थकता छिपी है। प्रार्थना व्यक्ति को परमात्मा के नजदीक ले जाती है। पूरा ऋग्वेद शान्तिप्रदायक प्रार्थनाओं से भरा पड़ा है। अत: कालसर्प योग के अनिष्ट नाशक हेतु किए गए शान्ति प्रयोगों की उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता।

सिंह लग्न

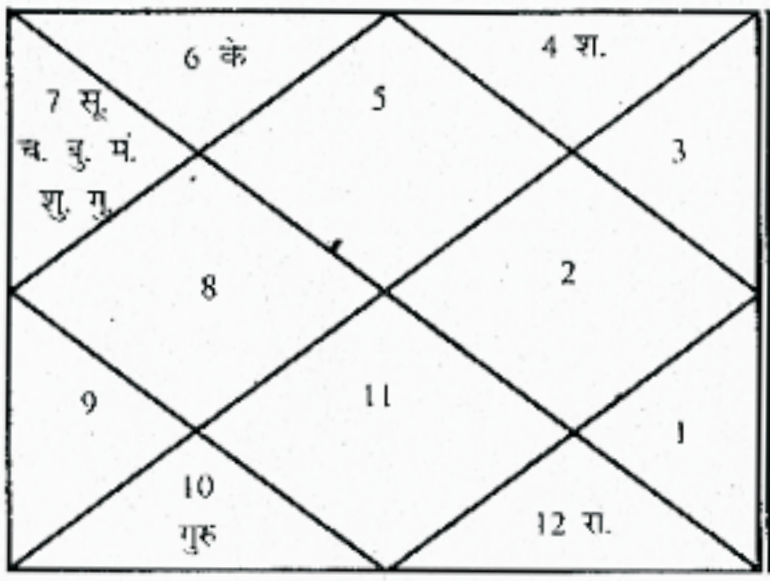

कन्या लग्न

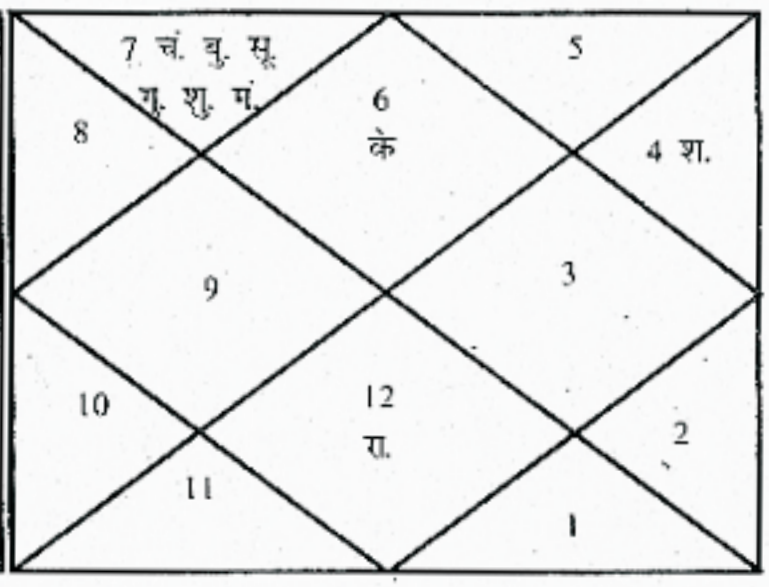

सिंह – कुटुम्ब में विवाद परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी। यात्राएं व्यर्थ होंगी, बहुत होंगी।

कन्या – धन का अपव्यय बहुत होगा। नित नए धंधे, कारोबार में रुचि बढ़ेगी। स्थिरता संदिग्ध।

तुला लग्न

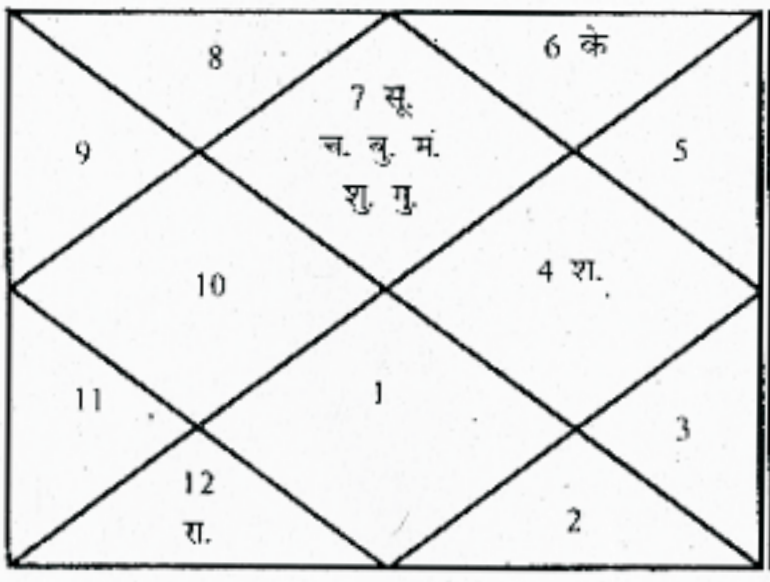

वृश्चिक लग्न

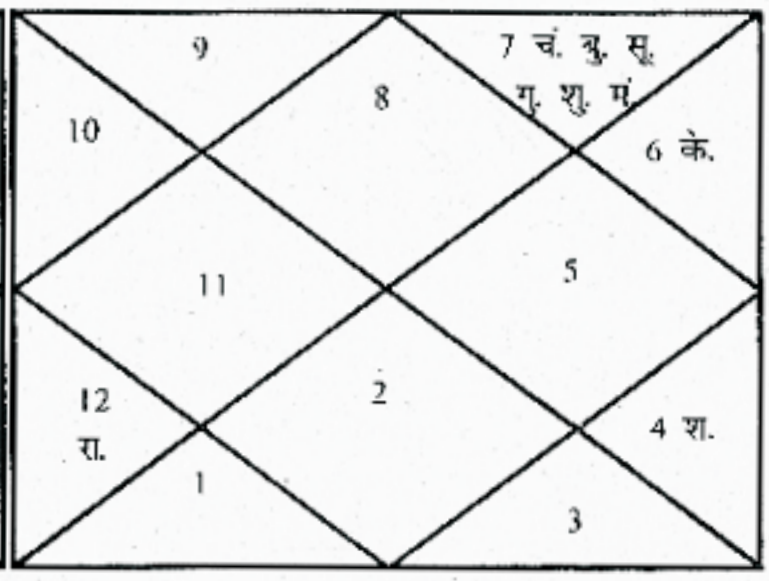

तुला – व्यापार-व्यवसाय में बढ़ोत्तरी, खर्च व कर्ज बढ़ेगा। नए वाहन, नए भवन की प्राप्ति पर दुर्घटना का भय बढ़ेगा।

वृश्चिक – संतान-विद्या में बाधा, दुर्घटना का भय प्रबल।

धनु लग्न

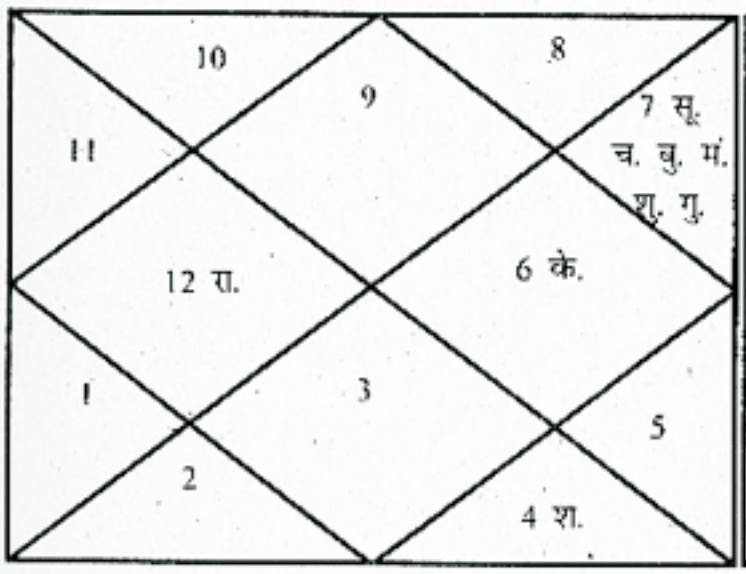

मकर लग्न

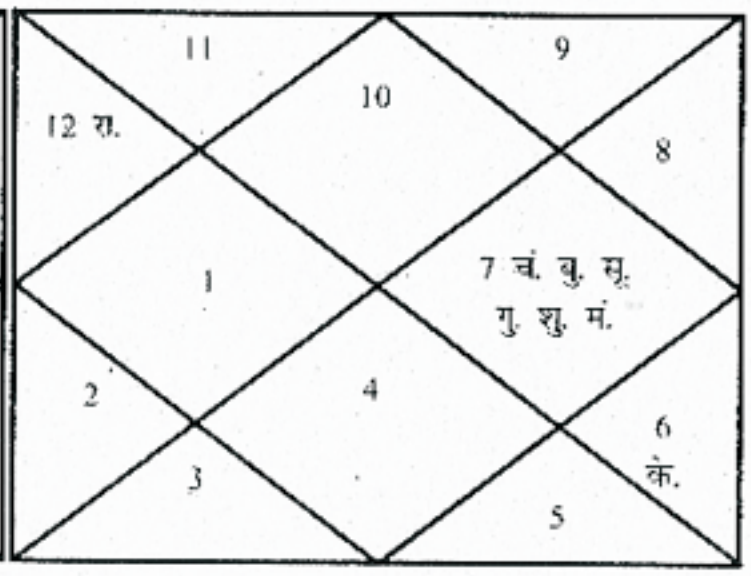

धनु – धन लाभ पर पांव में कष्ट, शारीरिक चोट पहुँचे। सुख में बाधा।

मकर – राजपथ में लाभ, कोर्ट में विजय, व्यापार-व्यवसाय में स्थाई सम्पत्ति की प्राप्ति पर भाईयों तथा पिता से विवाद बढ़े।

कुम्भ लग्न

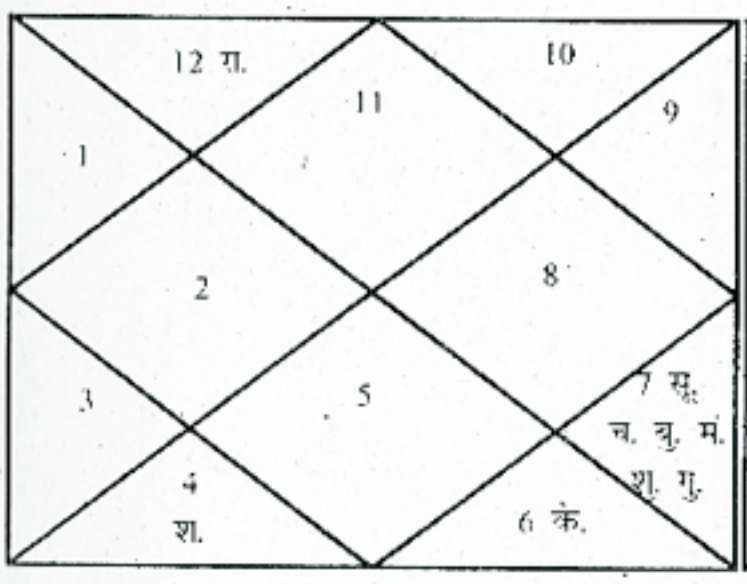

मीन लग्न

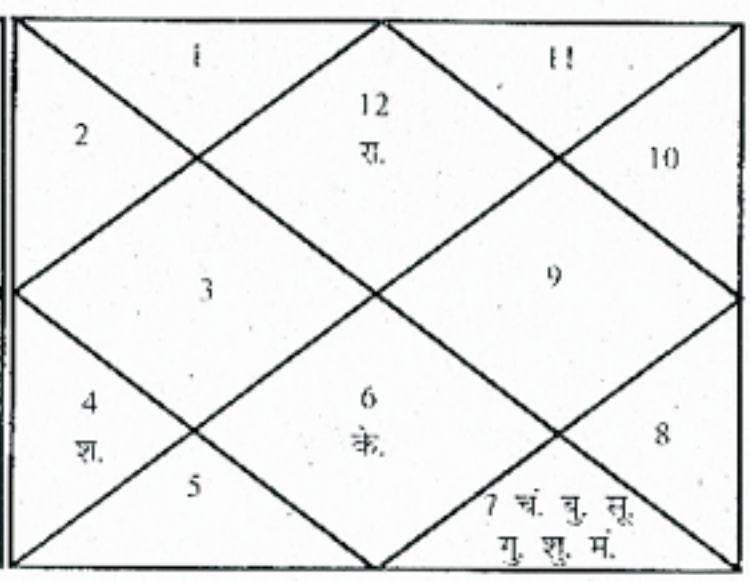

कुम्भ – भाग्योदय के नए अवसर प्राप्त होंगे। धन खर्च होगा। वाणी की असंयमता के कारण नया विवाद बनेगा।

मीन – दुर्घटना भय, चिन्ता, दुःख, हानि-कष्ट, अव्यर्थ यात्राएं होंगी। शत्रु परास्त होंगे।

भेदनीय ज्योतिष के परिपेक्ष्य में शुक्र, शनि और मंगल में तीनों ग्रह तुला

राशि पर आते हैं तो युद्ध की संभावना बढ़ती है। 1962-63 में भारत व चीन का युद्ध हुआ था। गुरु व शुक्र का एक राशिगत होना भी दुर्भिक्षकारक है। राष्ट्र में दु:ख व आतंक बढ़ता है। तुला का सूर्य व मंगल इन पदार्थों की हानि कराता है। इस प्रकार के अनेक तथ्य पंचग्रह, षट्ग्रह व सप्तग्रह युतियों पर फलादेश करते समय ध्यान में रखने चाहिए तथा जो जातक इन विशिष्ट युतियों में पैदा हुए, उनके जीवन के उतार-चढ़ाव का ग्राफ बनाना चाहिए। व्यवहारिक जीवन में सही फलादेश ही ज्योतिष की खुशबू (कीर्ति) है। ज्योतिष शास्त्र के अध्येता को अपने निजी अनुसंधान व अनुभव के आधार पर फलादेश की प्रखरता बढ़ानी चाहिए तथा अपने अनुभव ज्ञान को जनहित में, शास्त्र ज्ञान की अवरुद्ध धारा को आगे बढ़ाने के लिए निरन्तर प्रकाशित करते रहना चाहिए। यही सच्चे ज्योतिषी का कर्त्तव्य है।

विधवापन को हटाने वाला घट-विवाह

ज्योतिष शास्त्र में एक सर्वाधिक प्रसिद्ध श्लोक है-

"लग्ने व्यये चपाताले, जामित्रे चाष्टमे कुजे
कन्या भर्तु र्विनाशाय, भर्तु कन्या विनश्यति"

- मानसागरी अ, 4/श्लोक 4

अर्थात् जिस किसी जातक की जन्मकुण्डली के प्रथम भाव (लग्न स्थान), चतुर्थ (जामित्र) स्थान, सातवें (पाताल, आठवें एवं बारहवें व्यय स्थान) में मंगल हो तो वह कुण्डली मंगलीक कहलाती है। स्त्री जातक कुण्डली ऐसी ग्रह स्थिति के कारण "चुनरी मंगलवाली" तथा पुरुष जातक की कुण्डली "मौलिये मंगल" वाली कहलाती है। विवाह मेलापक करते समय ज्योतिष शास्त्र में मंगल का मिलान करना अति आवश्यक समझा जाता है। वरना दोनों में से एक की मृत्यु हो जाती है। कई बार ऐसा होता है कि लड़का पसन्द है, लड़की मंगलीक है, पर मंगल का मिलान नहीं हो रहा है ऐसे में शास्त्र घट विवाह जिसको कुम्भ विवाह भी कहते हैं, करने का निर्देश देता है। अत: विवाह के पूर्व कन्या का विवाह पहले विष्णुरूप घट (कुम्भ) से कराया जाता है। इससे मंगलदोष का परिहार हो जाता है।

इसके अतिरिक्त लड़की की जन्म कुण्डली में यदि "वैधव्य योग" हो या "विषयोग" हो तो उस दोष की निवृत्ति करने हेतु भी "धर्मसिन्धु" में "कुंर्भावाह" करने की व्यवस्था दी है। अत: कुल तीन कारणों की वजह से घट विवाह किया जाता है।

(1) मंगलीक कुण्डली

कन्या की जन्मकुण्डली में 1/4/7/8/12वें स्थान में मंगल हो तथा इन इन स्थानों में वर की जन्मकुण्डली में मंगल न हो तो शास्त्र कन्या के अखण्ड सौभाग्य की रक्षा हेतु घटविवाह करने की आज्ञा देते हैं। इसके पूर्व मंगलीक भंग योग हो तो वह भी देख लेने चाहिए।

(2) विष कन्या योग

सूर्य भौमार्किवारेषु तिथि भद्राशताभिथम्।
आश्लेषा कृत्तिका नागे, तत्र ज्ञाता विषांगना।1॥
जर्नुलग्ने रिपुक्षेत्रे संस्थितः पापखेचरः।
द्विसाम्यअपि योगेऽस्मिनसञ्जाता विषकन्यका।।2॥
लग्ने शनिश्चरो यस्याः सूतेऽर्को नवमें कुजः।
विषाख्या सापि नौद्वाहया, त्रिविधा विषकन्यका।।3॥

रवि, मंगल, शनिवार हो, भद्रातिथि 2/7/12 हो, शतभिषा, आश्लेषा, कृत्तिका, मूल नक्षत्र हो तथा इनमें से किन्हीं तीनों का जन्म के समय पूर्ण योग हो तो उत्पन्न बालिका विष कन्या होती है।।1।।

जन्म लग्न में शत्रुक्षेत्री पापग्रह हो, तथा उपर्युक्त प्रथम श्लोकों में से कोई दो योग बनते हों तो ऐसी बालिका विष कन्या होती है।।2।।

जिस कन्या के लग्न में शनि स्थित हो, पंचम भाव में सूर्य हो, नवम भाव में मंगल हो तो वह भी विष कन्या होती है। इस तरह तीन प्रकार की विष कन्याएं कही गई हैं।।3।।

विषकन्या योग में उत्पन्न कन्या शोक पीड़ित, परिवार को कष्ट देने वाली, पति तथा सन्तानसुख से हीन कही गई है। अतः विवाह करने से पूर्व अष्टकूट एवं मंगल मिलान के अतिरिक्त यह योग भी सूक्ष्मता से देखना चाहिए।

गुजराती व राजस्थानी में इसी आशय की एक कहावत सर्वत्र प्रचलित है-

"चौथ चतुर्थी षष्ठी जाणं, वारशनि के मंगल भाण।
ज्येष्ठा मूला श्रवण सही, आ पुत्री विषकन्या थई।
आप मरे के कुटुम्ब संहारे, नाम देवतो ब्राह्मण मारे,
इम करतो विष कन्या मोटी थाय, चंवरी माये वरने खाय।
देव संजोगे परणी जाय, ब्रह्मा विष्णु जोवण आय।।4॥

अर्थात् 4/6/14 इन तिथियों में से किसी भी तिथि को शनि या मंगलवार हो तो उस दिन ज्येष्ठ, मूल या श्रवण में का कोई भी नक्षत्र हो तो तीनों के सम्मिश्रण काल में यदि कोई कन्या पैदा हो तो वह विषकन्या कहलाती है।

इस योग में जन्मी कन्या जीवित नहीं रहती। प्रथमतः पैदा होते ही मर जाती है या फिर कुटुम्ब को नष्ट कर देती है। नामकरण संस्कार के समय यह नाम देने वाले ब्राह्मण को मार डालती है। फिर भी बड़ी हो जाए तो विवाह के समय (फेरे देते वक्त) वर को मार डालती है। फिर भी विवाह हो जाए तो ब्रह्मा,

विष्णु, महेश तीनों देवता, उसको देखने आते हैं। अर्थात् विषकन्या का विवाह कष्टकर होता है। यदि किसी कन्या की कुण्डली में इस प्रकार के योग हों तो उसका भी परिहार "घट विवाह" से होता है।

विषकन्या भंग योग

द्युनेपे वा शुभेस्ते विषाख्या न।

अर्थात् सप्तम स्थान में स्वयं सप्तमेश स्थिति हो, चाहे वह पापग्रह ही क्यों न हो अर्थात् सप्तम स्थान में स्वयं सप्तमेश हो तथा सप्तम भाव में शुभग्रह स्थिति हो तो विषकन्या योग भंग हो जाता है। सप्तम भाव में स्त्री के सौभाग्य का विचार होता है। यह बात हमें सदैव स्मरण रखनी चाहिए कि सप्तम में शुभग्रह हो, सप्तम भाव पर शुभग्रहों का प्रभाव हो तो सौभाग्य तो बढ़ेगा ही।

यदि ये दोनों योग पड़े हों तो उपर्युक्त तीन प्रकार के योग नष्ट हो जाते हैं। इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। इस विषय में कल्याण वर्मा ने 'सारावली' में कहा है-

वैधव्यं निधने चिन्त्यं शरीर जन्मलग्नतः।
सप्तमे पतिसौभाग्यं, पंचमे प्रसवस्था॥

- सारावली (स्त्री जातक)

अर्थात् पुरुष के अष्टम भाव से विधुरता एवं स्त्री के अष्टम भाव से वैधव्य का विचार करना चाहिए। सप्तम में दम्पति की स्थिति सम्पदा, वैभव एवं पति के सौभाग्य का पता चलता है। पंचम से प्रसव पुत्र-कन्या की स्थिति का पता लगाना चाहिए। अतः यहाँ भी पति सौभाग्य सुख हेतु स्त्री के सप्तम भाव को प्रधानता दी गई है।

वैधव्ययोग

(1) जिस कन्या की कुण्डली में सप्तम भाव में मंगल पापग्रहों से युक्त हो तथा पापग्रह सप्तमभाव में स्थित मंगल को देखते हों तो ऐसी कन्या युवावस्था में पहुँचने के पूर्व बालविधवा हो जाती है।

(2) चन्द्रमा से सातवें या आठवें भाव में पापग्रह हो तो मेष या वृश्चिक राशिगत राहु और आठवे या बारहवें स्थान में हो तो ऐसी कन्या निश्चय ही विधवा होती है। यह योग, वृष, कन्या एवं धनु लग्नों में लागू होता है।

(3) मकर लग्न हो तो सप्तमभाव में कर्क राशिगत सूर्य+मंगल के साथ हो तथा चन्द्रमा पापपीड़ित हो तो यह योग बनता है। ऐसी स्त्री विवाह के सात-आठ वर्ष के भीतर विधवा हो जाती है।

(4) लग्न एवं सप्तम भाव दोनों स्थानों में पापग्रह हों तो, विवाह के सातवें वर्ष पति का देहान्त हो जाता है।

(5) सप्तम भाव में पापग्रह हो तथा चन्द्रमा छठे या सातवें स्थान पर हो तो विवाह के आठवें वर्ष स्त्री विधवा हो जाती है।

(6) यदि अष्टम स्थान स्वामी सप्तम भाव में हो, सप्तमेश को पापग्रह देखते हों, सप्तम भाव पापपीड़ित हो तो नवोढ़ा स्त्री भी शीघ्र विधवा हो जाती है।

(7) षष्ठ व अष्टम स्थान के स्वामी यदि षष्ठ या व्यय भाव में पापग्रहों के साथ हो, सप्तम भाव शुभग्रहों से दृष्ट न हो, सप्तम भाव पापपीड़ित हो तो नवोढ़ा स्त्री भी शीघ्र वैधव्य को प्राप्त हो जाती है।

(8) **सप्तमाधिपति षष्ठे, व्यये वा पापपीडितौ।**
तदा वैधव्यमाप्नोति, नारी नैवात्र संशयः॥
अर्थात् जन्म लग्न से सप्तम, अष्टम स्थानों के स्वामी पापपीड़ित होकर छठे या बारहवें स्थानों में चला जाए तो निःसन्देह वैधव्ययोग होता है।

(9) पापग्रह से दृष्ट पापग्रह यदि अष्टम स्थान में हो और शेष ग्रह चाहे उच्चराशि में ही क्यों न हों, ऐसी स्त्री विधवा अवश्य होती है।

इस प्रकार के वैधव्य दोष की निवृत्ति हेतु धर्मशास्त्र कहते हैं-
"सावित्र्यादिव्रतं कृत्वा, वैधव्यदिनिवृत्तये।

अ श्वत्थादिभिद्वाह्या दद्यात्तां चिरजीवने॥1॥
बालवैधव्ययोग तु कुम्भदुपतिमादिभिः।
कृत्वा लग्नं ततः पश्चात् कन्योद्वाह्येति चापरे॥2॥

अर्थात् वट् सावित्रीव्रत कथा, वटवृक्ष के साथ विवाह, वटवृक्ष की लकड़ी से बनी सुवर्णयुक्त विष्णुप्रतिमा अथवा कुम्भ (घट) के साथ पहले विवाह करके ही अन्य के साथ विवाह करने से वैधव्य दोष परिहार हो जाता है।

अथ घट-विवाह प्रयोग

कन्या का पिता सपत्नीक किसी देवालय, नदी या किसी एकान्त स्थल में जाए। शुभ आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठे, प्राणायाम एवं पवित्रीकरण करके अपनी कन्या के विष-दोष, मंगली-दोष अथवा वैधव्य-दोष के परिहार हेतु घट-विवाह का संकल्प निम्न प्रकार से करे।

संकल्प

ॐ विष्णु र्विष्णुर्विष्णुः श्रीमदभगवतो इत्यादि पठित्वा एवं गुण विशेष विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम अस्याः कन्याया नक्षत्रादि योगेन ग्रहयोगेन च विषाख्य योग जननसूचित वैधव्यारिष्ट परिहारार्थ श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थ घटविवाहख्य कर्म करिष्ये।

इतना कहकर संकल्पित जल भूमि पर त्याग दे एवं पुनः हाथ या आचमनी में जल ले।

तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थ गणपतिपूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृका पूजन वसोर्धारापूजन वैश्वदेव-संकल्प नान्दीश्राद्धम् आचार्यवरणञ्च करिष्ये।

तत्रादौ दिग्रक्षणं-कलशार्चञ्च करिष्ये।

इसके बाद दिग्रक्षण, कलशपूजन करें, गणपतिपूजन एवं आचार्य का वरण करें। तत्पश्चात् प्रधानपीठ पर कलश स्थापित करें एवं विष्णु की सुवर्ण प्रतिमा अथवा वट (अश्वत्थ) वृक्ष की बनी प्रतिमा का "अग्न्युत्तारण" करें। मूर्ति का घी से स्नान करावें "ॐ समुद्रास्यत्वा" पढ़कर जलधारा से स्नान करा अग्न्युत्तारण करके प्राण प्रतिष्ठा करें। मूर्ति को दक्षिण हाथ में ग्रहण करके निम्न मन्त्र पढ़ें अथवा चाहें तो घट के भीतर विष्णु की प्रतिमा रखें।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं सः अस्या विष्णुमूर्तेः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं.। अस्या विष्णुमूर्तेः जीव इह स्थितः। ॐ आं.। आस्याः विष्णुमूर्तेः सर्वेन्द्रियाणि वांग्मनः चक्षुं क्षोत्रजिह्वाघ्राणपाणि पादपा

यूपस्थानीहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा। गर्भाधान-दिषोडश-संस्कारार्थ षोडश प्रणवान् जपेत।

तत्पश्चात् आवाहन इत्यादि षोडशोपचार से पूजा करें और फिर प्रार्थना करें-

"हे जलों के टिकने के स्थान कुंभ! वरुण के शरीर रूपी तुझको नमस्कार है और तुम इस कन्या के पति को चिरकाल तक स्थिर रखें और पुत्र, पौत्र आदि के सुख से सुखी करो। हे विष्णो! हे देव! इस कन्या के दु:ख को आप दूर करो, तत्पश्चात् विष्णुरूपी कुंभ (घट) को कन्या अर्पित करे।

"वरुणांगस्वरूपाय जीवनानां समाश्रय:।
पतिं जीवय कन्यायाश्चिचरं पुत्रसुखं कुरु॥
देहि विष्णो वरं देहि कन्यां पालय दु:खत:॥

इतना कहकर सुवर्ण युक्त विष्णु प्रतिमा को जल में छोड़ दें। कन्या एवं घट के मध्य अन्तर्पट रखें। घड़े का मुख कपड़े से वेष्ठित करें। कन्या को उसके सम्मुख पश्चिममुखी बैठाकर मंगलाष्टक पढ़ें। फिर "ॐ प्रतिष्ठा" आदि पढ़कर कुंभ (घट) पर वस्त्र, उपवस्त्र रखें। मधुपर्क, अलंकार दे। मंगल तन्तु बांधे। मंगल मन्त्रों "परित्वा." को पढ़ते हुए कुम्भरूप विष्णु को कन्या दान करें। कन्या दान का संकल्प इस प्रकार करें।

कन्यादान सकल्प

"ॐ विष्णुविष्णु र्विष्णु: श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णो. इत्यादि पठित्वा। एवं गुण विशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अस्या: कन्याया विषाख्ययोग जनन वैद्यव्यदोषाय नुत्तयें श्री विष्णु स्वरूपिणे अ श्वत्थ कुम्भाय श्री रूपिणीमिमां कन्या तुभ्यमहं सम्प्रददे।"

इतना कहकर कन्या के दक्षिण हाथ में जल देकर विष्णु स्वरूप घट को समर्पित कर दें और मन्त्र पढ़ें।

"गौरी कन्यामिमां श्लक्ष्णां यथाशक्ति विभूषिताम्।
ददामि विष्णवे तुभ्यं सौभाग्यं देहि सर्वदा॥
विष्णुं रूपिणे कुम्भायेइ मां कन्यां सम्प्रददे॥"

इसके बाद वस्त्र ग्रन्थि खोलकर घड़े को जल में छोड़ दें। कन्या चूड़ियां छोड़ दे। बिन्दी मिटा दे। रंगीन वस्त्र-आभूषण त्यागकर आचार्य को सौंप दे। आचार्य "ऐन्द्रवारूपणपावनीय" मन्त्रों से त्याग पंचमल्लवों से युक्त कलश के पवित्र जल से कन्या को अभिषेक दे। कन्या स्नान करके दूसरे शुद्ध वस्त्र पहने। कन्या आचार्य को दक्षिणा देकर सन्तुष्ट करे और कहे-**"भो ब्राह्मणा: अहम्**

अनेन कुम्भविवाहकर्मणा अनघाऽस्मि?" ऐसे तीन बार कहे। **"त्वमनधाऽसि एवमस्तु"**। ऐसे वाक्य आचार्य तीन बार प्रवचन में कहे। उसके बाद कर्म प्रधान देवता एवं गणपति का विसर्जन करे। ब्राह्मण भोजन-दान के बाद आचार्य अखण्ड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दे।

पुरुषों के लिए अर्क विवाह

जिस प्रकार विषकन्या योग स्त्री को होता है उसी प्रकार पुरुष के भी कुण्डली में मृतपत्नी योग विधुरयोग या विषयोग होता है। सप्तम भाव दूषित होने पर या जिस पुरुष की स्त्री जीवित नहीं रहती जिसके दो-तीन विवाह होने पर भी स्त्री का सुख नहीं रहता, ऐसे पुरुष को अर्क के साथ विवाह कर, उसके बाद अन्य कन्या से विवाह कराया जाता है। घट विवाह की भाँति अर्क विवाह भी शास्त्रसम्मत सप्तमभाव जन्यदोष व अनिष्ट निवारण का उत्तमोत्तम परिहार है।

केमद्रुम शान्ति प्रयोग

भारत भर से हजारों पत्र आते हैं कि जन्मपत्रिका में केमद्रुम योग पड़ा है। इसकी शान्ति का कोई उपाय बताएं। प्रबुद्ध पाठक सबसे पहले यह समझें कि केमद्रुम योग वास्तव में होता क्या है।

केमद्रुम योग की निष्पत्ति

केमद्रुम भवति पुत्र कलत्रहीनो,
देशान्तरे वज्रति दुखसभाभितप्तः।
ज्ञातिप्रमोदनिरता मुखरः कुचैलो,
नीचः सदाभवति भीतियुतिश्चरायुः॥

-मानसागरी 4/1

जब चन्द्रमा किसी ग्रह से युत न हो, चंद्र से द्वितीय तथा द्वादश स्थान में जब कोई ग्रह न हो तथा शुभ ग्रह चंद्रमा को न देखते हों तो "केमद्रुम योग" बनता है।

परिणाम

यह दरिद्रतादायक योग है। शास्त्रकारों ने कहा है-"द्रव्यदाते तु चन्द्रमाः।" अर्थात् धन को देने में चंद्रमा का मुख्य हाथ है। केमद्रुम योग के परिणाम अमंगलकारी होते हैं। इसलिए "जातक पारिजात" कहता है-

योग केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन् कस्मिश्च जातके।
राजयोगा विनश्यन्ति, हरि दृष्टवां यथा द्विपाः॥

विशेष-अर्थात् दूसरे राजयोग व मंगलकारी योग कुंडली में चाहे जितने बनते हों परन्तु यदि एक केमद्रुम योग बनता है तो सारे राजयोग उसी प्रकार नष्ट हो जाते हैं जिस प्रकार से एक सिंह सारे हाथियों के समूह को भगा देता है। यह योग दुःख का मूल है। जातक को पुत्र व पत्नी संबंध पीड़ा देता है। जातक को निरर्थक देशाटन कराता है। साथ ही जातक द्वारा एकत्रित धन का नाश करता है। रुपयों की प्राप्ति हेतु जातक को दर-दर भटकाता है। रुपए एकत्रित नहीं होने देता।

केमद्रुम शान्ति के उपाय

1. चन्द्रमा को मजबूत करने के लिए मोती युक्त चन्द्रमा "चन्द्र यंत्र" साथ धारण करे।

कालसर्प योग किसे कहते हैं?

सामान्यत: जन्मकुण्डली के सारे ग्रह जब राहु और केतु के बीच में कैद हो जाते हैं, तो उस ग्रह स्थिति को 'कालसर्प योग' कहते हैं। राहु सर्प का मुख माना गया है और केतु इस सर्प की पूंछ। काल का अर्थ 'मृत्यु' है। यदि अन्य ग्रहयोग बलवान न हों तो कालसर्प योग में जन्मे जातक की मृत्यु शीघ्र हो जाती है। यदि जीवित रहता है तो मृत्यु-तुल्य कष्ट भोगता है। ज्योतिष शास्त्र में इस योग के प्रति मान्यता प्राय: अशुभ फलसूचक ही है।

सर्प का इस योग से सम्बन्ध

सर्प का भारतीय संस्कृति से अनन्य सम्बन्ध है। एक बार महर्षि सुश्रुत ने भगवान धनवन्तरि से पूछा-'हे भगवान्! सर्पों की संख्या और इसके भेद बतावें?

सुश्रुत के इन वचनों को सुनकर वैद्यों में श्रेष्ठ धनवन्तरि ने कहा, "वासुकि जिनमें श्रेष्ठ है, ऐसे तक्षकादि सांप असंख्य हैं। ये सर्प अन्तरिक्ष एवं पाताल लोक के वासी हैं पर पृथ्वी पर पाए जाने वाले नामधारी सर्पों के भेद अस्सी प्रकार के हैं।"

भारतीय वाङ्मय में विषधर सर्पों की पूजा होती है। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार सर्प को मारना उचित नहीं समझा जाता तथा यत्र-तत्र उनके मन्दिर बनाए जाते हैं। ज्योतिषशास्त्रानुसार नागपंचमी, भाद्रकृष्ण अष्टमी तथा भाद्रशुक्ल नवमी को सर्पों की विशेष पूजा का प्रावधान है। पुराणों में शेषनाग का वर्णन है जिस पर विष्णु भगवान शयन करते हैं। वह भी एक सर्प है। सर्पों को देव योनि का प्राणी माना जाता है। नए भवन के निर्माण के समय नींव में सर्प की पूजा कर चांदी का सर्प छोड़ा जाता है। वेद के अनेक मन्त्र सर्प से सम्बन्धित हैं। आज भी सर्प सम्प्रदाय के जन पाए जाते हैं। जिनको 'सपेरा' कहते हैं। नाग जाति व सम्प्रदाय के लोग भी मिलते हैं। शौनक ऋषि के अनुसार जब मनुष्य की धन पर अत्यधिक आसक्ति हो जाती है तो मृत हो जाने पर वह नाग बनकर उस धन पर जा बैठता है। सर्प कुल के 'नाग' श्रेष्ठ होते हैं। नाग की हत्या इस जन्म में जन्मान्तर तक पीछा नहीं छोड़ती। नाग-वध का शाप पुत्र-सन्तति में बाधक होता है। कई प्रदेशों में नाग-वध शाप को दूर करने के लिए पिष्टमय नाग का विधिवत् पूजन करके उसे दहन किया जाता है तथा भस्मी के तुल्य सुवर्ण धातु दान में दिया जाता है।

शास्त्रों में सर्प को काल का पर्याय भी कहा है। 'काल' स्वयं उत्पन्न हुआ है, किसी ने इसको उत्पन्न नहीं किया। काल आदि, मध्य, अन्त एवं विनाश से रहित है। मनुष्यों का जीवन और मरण काल के आधीन है। काल सर्वथा गतिशील है। यह कभी किसी के लिए रुकता नहीं, यह सर्वदा गतिशील है। काल प्राणियों को मृत्यु के पास ले जाता है और सर्प भी। कालसर्प योग सम्भवत: समय की गति से जुड़ा हुआ ऐसा ही योग है जो मनुष्य को परेशान करता है। उसके जीवन को भारी संघर्ष से जोड़ता है।

बहुचर्चित कालसर्प योग मूलत: कहाँ से आया? फलित ज्योतिष में इसकी शुरुआत कहां से हुई? इसके प्रवर्तक, प्राचार्य कौन थे? कालसर्प योग का प्रभाव होता भी है या नहीं? जातक की कुण्डली देखते समय हमें इस योग पर विचार करना चाहिए या नहीं? ये सभी प्रश्न एक ज्योतिष प्रेमी जिज्ञासु के सामने उपस्थित होते हैं जिसका समाधान आज के वैज्ञानिक युग में नितान्त अनिवार्य है। आइए, हम सब लोग मिलकर इस पर विचार करें।

राहु-केतु का सर्पयोग से सम्बन्ध

पौराणिक मत के अनुसार 'राहु' नामक राक्षस का मस्तक कट कर गिर जाने पर भी वह जीवित है एवं केतु उसी राक्षस का धड़ है। राहु और केतु एक ही शरीर के दो अंग हैं। चुगली खाने के कारण सूर्य-चन्द्र को ग्रहण कर ग्रसित कर, सृष्टि में भय फैलाते हैं। ज्योतिष में राहु को 'सर्प' कहा गया है और केतु उसी सर्प की पूंछ है। बृहत्संहिता के राहु-चाराध्याय, अध्याय 3, श्लोक 3 में लिखा है कि-

"मुखं पुच्छ विभक्ताङ्गं भुजङ्गमाकारमुपदिशन्त्यन्ये"

"मुख और पुच्छ से विभक्त है अंग जिसका ऐसा जो सर्प का आकार है, वही राहु का आकार है।"

'कामरत्न', अध्याय 14, श्लोक 47 में सर्प को ही 'काल' कहा है।

न पश्येद्वीक्ष्यमाणेऽपि काल दृष्टो न संशय:॥47॥

सर्पदंशोविषंनास्ति कालदृष्टो न संशय:॥50॥

तथा यह काल ही 'मृत्यु' है।

विक्रम की 16वीं शताब्दी में मानसागर नामक एक विद्वान हुए जिन्होंने फलित ज्योतिष के पूर्वाचार्यों के श्लोकों को संकलित कर 'मानसागरी' नामक सुन्दर ग्रन्थ की रचना की। उन्होंने अरिष्टयोगों पर चर्चा करते हुए अध्याय 4, श्लोक 10 में लिखा-

लग्नाच्च सप्तमस्थाने शनि-राहु संयुतौ
सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपितोपि च॥

अर्थात् सातवें स्थान में यदि शनि-सूर्य व राहु की युति होती है तो पलंग (शय्या) पर सोते हुए व्यक्ति को भी सांप काट जाता है। फलित ज्योतिष पर निरन्तर अध्ययन-अनुसंधान करने वाले आचार्यों ने जब देखा कि सर्प के मुख-पुच्छ अर्थात् राहु-केतु के मध्य सारे ग्रह अवस्थित हों तो जातक का जीवन ज्यादा कष्टमय रहता है, तो इसे 'कालसर्प योग' की संज्ञा दे दी होगी। वस्तुतः कालसर्प योग 'सर्पयोग' का ही परिष्कृत स्वरूप है।

कालसर्प योग की प्राचीनता

महर्षि पराशर ने फलित ज्योतिष में 'सर्पयोग' की चर्चा करते हुए कहा कि सूर्य, शनि व मंगल-ये तीनों पापग्रह यदि तीन केन्द्र स्थानों में 1/4/7/10 में हों और शुभग्रह केन्द्र से भिन्न स्थानों में हो तो 'सर्पयोग' की सृष्टि होती है।

केन्द्रत्रयगतैः सौम्ये पापैर्वा दलसंज्ञकौ।
क्रमान्याभुजंगाख्यौ शुभाशुभफलप्रदौ॥ - अ. 36/पृ. 197

बृहत्पाराशर के अनुसार 'सर्पयोग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति कुटिल, क्रूर, निर्धन, दुःखी, दीन एवं पराए अन्न पर निर्भर रहने वाला जातक होता है। यथा-

विषयाः क्रूरा निःस्वानित्यं दुखार्दिता सुदीनाश्च।
परभक्षपाननिरताः सर्वप्रभवा भवन्ति नराः॥ - अ. 36/पृ. 200

महर्षि बदरायण, भगवान गर्ग, मणित्थ ने भी जलयोग के अन्तर्गत 'सर्पयोग' को पुष्ट किया है।

केन्द्रत्रयगतैः पापै सौम्यैर्वा दलसंज्ञितौ।
द्वौयोगो सर्पमालाख्यौ विनष्टेष्टफलप्रदौ॥ - बृहत्पाराशर अ.36/पृ. 371

बृहत्जातक 'नाभसयोग' अध्याय 12, पृष्ठ 148 पर इस योग को वराहमिहिर द्वारा भी अपने ग्रन्थों को उद्धृत किया गया। काल ने करवट ली। ईसा की आठवीं शताब्दी में स्वनामधन्य आचार्य कल्याणवर्मा ने सर्पयोग की परिभाषा में संशोधन किया। उन्होंने अपने दिव्यग्रंथ 'सारावली' में स्पष्ट किया (अध्याय 11, पृष्ठ 154) कि प्रायः सर्प की स्थिति पूर्ण वृत न होकर वक्र की रहती है। अतः तीन केन्द्रों तक में ही सीमित सर्पयोग की व्याख्या उचित प्रतीत नहीं होती। उनका मानना था कि चारों केन्द्र, किंवा केन्द्र व त्रिकोणों से वेष्ठित पापग्रह की उपस्थिति भी 'सर्पयोग' की सृष्टि करती है।

जांतकतत्त्वम्, जातकदीपक, ज्योतिष रत्नाकर, जैन ज्योतिष के अनेक प्राचीन-ग्रंथों में कालसर्प योग के दृष्टान्त मिलते हैं। एक पाश्चात्य विद्वान ने "Rahu & Ketu" नामक आंग्लग्रन्थ के अध्याय 13, पृष्ठ 114 पर कालसर्प योग की नवीन व्याख्या प्रस्तुत की है। मेरे द्वारा सम्पादित 'अज्ञातदर्शन' अंक 7/1 जनवरी, 84 में एवं 'श्रीमालीअभ्युदय' में भी कई बार कालसर्प योग पर शोध-कार्य प्रकाशित हुए हैं।

शापित जन्मकुण्डलियाँ

फलित क्षेत्र में काम करने वाले ज्योतिषियों के पास कई बार ऐसी जन्मकुण्डलियां आती हैं जिनकी ग्रह-स्थिति तो बहुत ही उत्तम है। योगायोग भी श्रेष्ठ हैं पर उसके अनुपात में जातक की उन्नति कुछ भी नहीं। आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे ये कुण्डलियां प्राय: शापित होती हैं। बृहत्पाराशर में 14 प्रकार के शाप बताए हैं। उनमें से पितृशाप, प्रेमशाप, ब्राह्मणशाप, मातुलशाप, पत्नीशाप, सहोदरशाप, सर्वशाप प्रमुख हैं। इन शापों के कारण व्यक्ति की उन्नति नहीं होती, उसे पुरुषार्थ का फल नहीं मिलता। उसकी सन्तान जीवित नहीं रहती। महर्षि भृगु 'भृगुसूत्र' के आठवें अध्याय, श्लोक 1-12 में लिखते हैं कि यदि लग्न से पंचम भाव में राहु हो तो व्यक्ति को सर्प के शाप से पुत्र का अभाव रहता है तथा नाग की प्रतिष्ठा करने से पुत्र की प्राप्ति होती है। यथा-

पुत्राभाव: सर्पशापात् सुतक्षय:॥11॥
नाग प्रतिष्ठया पुत्र:प्राप्ति॥12॥

शापित जन्मकुण्डलियों में त्रिशूलयोग के आधार पर कालसर्प योग का प्रचलन बढ़ा क्योंकि शापित जन्मपत्रिकाएं और कालसर्प योग की जन्मपत्रिकाओं में बहुत-सा साम्य मिलता है।

पश्चिमी राजस्थान के जालौर प्रान्त से एक जैन दम्पति हमारे पास आए। विवाह के 14 वर्ष उपरान्त उनको कोई सन्तान नहीं थी। डॉक्टरी चेकअप के अनुसार पति-पत्नी दोनों में से किसी को कोई दोष नहीं था। फिर भी सन्तान नहीं थी। उनके पंचम भाव में राहु था। कालसर्पयोग जैसी कोई बात नहीं थी। वे सज्जन बाहर गांव से आए थे। उनको 'कालसर्प योग' निवृत्ति की विधि समझाकर वापस भेज दिया। उन्होंने अपने गांव में विधि करवाई, पर उससे संतुष्ट नहीं हुए। मुझे विशेष आग्रह करके अपने गांव ले गए। वहां ग्यारह ब्राह्मणों से इस पुस्तक अनुसार विधि कर हवन करवाया। ईश्वर की कृपा से उस जैन दम्पति को उसी वर्ष पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई। सच्चे मन से श्रद्धापूर्वक यजन किया जाए तो दुर्लभ वस्तु की प्राप्ति हो जाती है।

सर्पशाप से ग्रसित कुण्डलियां

प्रसंगवश कालसर्प योग की भांति ही सर्पशाप से ग्रसित कुण्डलियों का विवेचन करना आवश्यक समझता हूँ। वैसे तो 14 प्रकार से श्रापित कुण्डलियों की शान्ति 'कालसर्प योग' विधि से हो जाती है। केवल संकल्प के समय उच्चारण में पाठान्तर होता है परन्तु सर्पशाप से ग्रसित जन्मपत्रिकाओं की निवृत्ति भी कालसर्प योग विधि से ही होती है।

योगायोग

1. **सुते राहौ भौमदृष्टे सर्पशापात् सुतक्षयः॥**
   पंचम भाव में राहु हो, मंगल उसे देखता हो।
2. **यमे सुते चन्द्र दृष्टे सुतेशे राहुयुते सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचम स्थान में शनि हो, पंचमेश राहु से युत हो तथा चन्द्रमा उसे देखता हो।
3. **सुतेशे भौमे, सुते राहौ सौम्यादृष्टे सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचमेश मंगल (कर्क या धनु लग्न) हो, पंचम भाव में राहु शुभग्रहों से दृष्ट न हो।
4. **स्वांशे भौम, पुत्रेशे ज्ञे, पापयुते सर्पशापात् विपुत्रः।**
   पंचमेश मंगल (कर्क या धनु लग्न) हो, मंगल अपने ही नवमांश में हो या पंचमभाव में हो, पंचमस्थ राहु या अन्य पापग्रह हो।
5. **सुतकारकयुतौ राहुतुंगेशयुते, पुत्रेशे त्रिके, सर्पशापाद् विपुत्रः।**
   सुतकारक गुरु मंगल से युत हो, लग्नेश राहु से युत या लग्न में राहु हो, पंचमेश त्रिक्स्थानों (7, 8, 12) में हो।
6. पुत्रकारक गुरु राहु से युक्त हो, तथा पंचमभाव शनि से दृष्ट हो।
7. कर्क या धनु लग्न में पंचमस्थ राहु बुध से युत या दृष्ट हों।
8. पंचमस्थान में सूर्य, मंगल, शनि अथवा राहु हो तथा पंचमेश और लग्नेश दोनों बलहीन हों।
9. लग्नेश राहु से युत, पंचमेश मंगल से युत तथा गुरु राहु से दृष्ट हो।
10. अनुभव में ऐसा आया है कि राहु गुरु की युति जन्मपत्रिका में कहीं भी हो तो सर्प के शाप से सन्तति जीवित नहीं रहती। चन्द्रमा से राहु केतु आठवें स्थान में हो तो वह पत्रिका पूर्व जन्मकृत शाप की समझनी चाहिए। ऐसे में जातक को कालसर्प योग की शान्ति से बड़ा लाभ मिलता है।

कालसर्प योग की परिभाषा

सभी ग्रह यदि राहु और केतु के मध्य में आ जाएं तो 'कालसर्प योग' की सृष्टि होती है। मोटे तौर पर कालसर्प योग दो प्रकार के होते हैं। एक उदित गोलार्द्ध और दूसरा अनुदित गोलार्द्ध। उदित गोलार्द्ध को ग्रस्त योग कहते हैं तथा अनुदित को मुक्त योग कहते हैं।

लग्न में राहु तथा सप्तम में केतु हो, सारे ग्रह 7/8/9/10/11/12वें स्थानों में हों तो यह उदित कालसर्प योग कहलाता है। राहु-केतु का भ्रमण हमेशा उलटा चलता है। इस योग में सभी ग्रह क्रमशः राहु के मुख में आते चले जाएंगे।

विशेष ज्ञातव्य

1. कालसर्प योग के निर्माण में यूरेनस, नेपच्यून व प्लूटो का कोई स्थान नहीं है।
2. यदि कोई ग्रह समान राशि में बैठा हो। नक्षत्र या अंशों की गणना से राहु केतु से दूर चला जाए, ऐसी अवस्था में कालसर्प योग भंग हो जाता है, ऐसी मान्यता यहां इस योग में निरर्थक है।
3. कई बार ऐसा होता है कि राहु-केतु के मध्य सातों ग्रह न आकर एकाध ग्रह उनकी (कैद) पकड़ से बाहर निकल जाता है। ऐसे में उस कुण्डली पर कालसर्प योग की छाया बरकरार है। इसे 'आंशिक कालसर्प योग' कहते हैं। शान्ति अनिवार्य है, ऐसा समझना चाहिए।
4. राहु+मंगल, राहु+गुरु, राहु+बुध, राहु+शुक्र, राहु+शनि ये युतियां अनिष्ट फल देती हैं तथा ऐसी पत्रिकाएं शापित मानी जाती हैं।
5. चन्द्र+केतु, चन्द्र+राहु, सूर्य+केतु युतियां प्रतियुतियां कालसर्प योग की तीव्रता को पुष्ट करती हैं तथा पीड़ा उत्पन्न करती हैं।
6. ऐसा अनुभव में आया है कि वृषभ, मिथुन, कन्या और तुला इन लग्नों में पड़ा कालसर्पयोग ज्यादा पीड़ा देता है।
7. राहु से अष्टम में सूर्य पड़ा हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।
8. ऐसे ही चन्द्रमा से राहु+केतु आठवें हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।
9. जन्मपत्रिका में राहु 6-8-12 में हो तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है।

10. जिस पत्रिका में 'कालसर्प योग' पड़ा है तथा शुभग्रह राहु से पीड़ित हैं अथवा राहु स्वयं पापग्रहों से पीड़ित है तो ऐसे जातक को राहु की महादशा में कष्टों का सामना करना पड़ेगा।
11. राहु मिथुन एवं कन्या का हो तो अन्धा होता है। यदि कालसर्प योग मिथुन या कन्या राशि में राहु द्वारा ग्रसित हो रहा हो तो ज्यादा पीड़ादायक होता है। कालसर्प योग में जन्मे व्यक्ति को राहु या केतु की दशा, अन्तर्दशा अथवा गोचर में राहु का 6/8/12 स्थानों में भ्रमण विशेष कष्टदायक रहता है।

कालसर्प योग का प्रभाव

कालसर्प योग में जन्मे व्यक्ति को प्राय: बुरे स्वप्न आते हैं। स्वप्न में सांप दिखलाई पड़ते हैं। रात को चमकना, पानी से डरना तथा ऐसे जातक को अकाल मृत्यु का भय रहता है। नींद में चमकना, हमेशा कुछ-न-कुछ अशुभ होने की आशंका मन में रहना, नाग का दीख पड़ना, उसे मारना, उसके टुकड़े होते देखना, नदी-तालाब, कुएं व समुद्र का पानी दीखना, पानी में गिरना और बाहर आने का प्रयत्न करना, झगड़ा होते देखें और खुद झगड़े में उलझ जाएं, मकान गिरते देखना, वृक्ष से फल गिरते देखना। स्वप्न में विधवा स्त्री दीखे, चाहे वह स्वयं के परिवार की ही क्यों न हो। जिनके पुत्र जीवित नहीं रहते हैं, उन्हें स्वप्न में स्त्री की गोद में मृतबालक दिखलाई पड़ता है। नींद में सोते हुए ऐसा लगे कि शरीर पर सांप रेंग रहा हो पर जागने पर कुछ भी नहीं। छोटे बच्चे बुरे स्वप्न के कारण बिस्तर गीला कर देते हैं। ये सभी स्वप्न अशुभ हैं तथा कालसर्प योग की स्थिति को स्पष्ट करते हैं।

कालसर्प योग का प्रमुख लक्षण एवं प्रत्यक्ष प्रभाव संतान अवरोध, गृहस्थ में प्रतिफल कलह, धनप्राप्ति की बाधा एवं मानसिक अशान्ति के रूप में प्रकट होता है। उपर्युक्त सभी प्रवाह मोटे तौर पर बताए गए हैं। कालसर्प योग भी कई प्रकार के होते हैं तथा उसका सूक्ष्म प्रभाव हम आगे बतला रहे हैं।

जातक के शरीर में वात, पित्त, त्रिदोषजन्म उत्कन्ट रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। गंडमाला, कुष्ठ, कण्डू, नेत्र-कर्णशूल, मूत्रकृच्छ एवं ऐसे रोग जो नित्य पीड़ा देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों तो समझ लीजिए सर्पवध के कारण ही यह रोग उत्पन्न होते हैं। नागबली विधान के बिना इसकी शान्ति सम्भव नहीं।

कालसर्प योग के बारे में भ्रान्तियाँ

मेरे बम्बई प्रवास के दौरान 24-3-93, चैत्र शुक्ल प्रतिपदा बुधवार के एक विशिष्ट मुहूर्त में एक बड़ी लक्जरी बस, एक टैक्सी व दो कारों में बम्बई शहर के प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों वाला एक छोटा जनसमूह नासिक-त्र्यम्बकेश्वर की ओर मेरे नेतृत्व में प्रस्थान कर रहा था। इसकी सूचना 'नवभारत टाइम्स', 'बम्बई समाचार', 'जन्मभूमि', 'गुजरात समाचार' जैसे कई समाचारपत्रों में थी। एक हजार साधारण जन्मपत्रिकाओं के मंध्य में हमें औसत एक कुण्डली कालसर्प योग वाली मिलती है। इतने सारे कालसर्प योग वाले व्यक्तियों को एकत्रित करके ले जाने में एक अजीब-सी बेचैनी महसूस हो रही थी। कहीं कोई अप्रिय घटित न हो जाए, इस हेतु शुभमुहूर्त में प्रस्थान करने के समय को लेकर मेरे अपने सहयोगियों के साथ विचार-विमर्श चल रहा था।

इतने में टेलीफोन की घंटी घनघना उठी। बम्बई के कुछ ज्योतिषियों के फोन थे। वे कह रहे थे कि ये आप क्या करने जा रहे हैं। 'कालसर्प योग' जैसी कोई चीज होती ही नहीं? कोई अनाड़ी या ज्योतिष शास्त्र को न मानने वाला व्यक्ति ऐसी बात करता तो कोई आश्चर्य नहीं होता? पर स्वयं ज्योतिषी ऐसी बात करे तो बड़ी हैरानी होती है। कालसर्प योग के बारे में बहुत-सी भ्रान्त धारणाएँ, मैं पहले भी कई बार सुन चुका हूँ। मैंने ऐसे कुतर्की सज्जनों की मन:स्थिति एवं परिस्थिति दोनों का सूक्ष्म अध्ययन किया। प्राय: ऐसे लोगों को कर्मकाण्ड का ज्ञान नहीं होता। ऐसे अधकचरे लोग बीमारी बताना तो जानते हैं पर इसके इलाज से नितान्त अनभिज्ञ होते हैं। वस्तुत: जन्मकुण्डली पूर्वजन्म प्रदत्त पुण्य-पाप का लेखा-जोखा ही तो है। यदि पुण्य बलवान है तो केन्द्रत्रिकोण में शुभग्रह उच्च के बैठे होंगे। व्यक्ति भाग्यशाली कहलाता है। भाग्यशाली व्यक्ति की पहचान स्पष्ट है। महर्षि कल्हण कहते हैं-

अर्था भाग्योदये जन्तुं विवशन्ति शतश: स्वयम्।
दिग्भ्योऽभ्युपेत्य सर्वाभ्य: सायं तरूपि वाङ्जाम्।।

अर्थात् सन्ध्या होते ही जैसे सब पक्षी विभिन्न दिशाओं से आकर वृक्षों पर बसेरा लेने पहुँच जाते हैं, उसी प्रकार जब मनुष्य का भाग्योदय होता है तब सब दिशाओं से नाना प्रकार की सुख-सम्पत्तियां अनायास भाग्यशाली व्यक्ति के पास स्वत: ही पहुँच जाती हैं।

जाने-अनजाने में किए पापकर्मों के फलस्वरूप 'दुर्भाग्य' का उदय होता है। दुर्भाग्य सन्तान अवरोध के रूप में प्रकट होता है। कुलक्षिणी व कलहप्रिय पत्नी या पति का मिलना दूसरा दुर्भाग्य है। चौथा दुर्भाग्य शारीरिक हीनता या मानसिक दौर्बल्य है, जिसके फलस्वरूप व्यक्ति में निराशा की भावना जागृत होती है और अपने जीवित शरीर का बोझा ढोते हुए शीघ्रातिशीघ्र मृत्यु को प्राप्त करना चाहता है। दुर्भाग्य से ये चारों लक्षण 'कालसर्प योग' वाली कुण्डली में स्पष्टः प्रतिबिम्बित होते हैं। सबसे पहले व्यक्ति दुर्भाग्य से बचने के लिए भौतिक उपायों का अवलम्ब लेता है। वह डॉक्टर, वैद्य, हकीम के पास पहुँचता है। धन प्राप्ति के अनेक उपाय सोचता है, प्लानिंग करता है। बार बार युक्तिसंगत प्रयत्न करने पर भी जब कार्य नहीं होता तब अन्तिम रूप में ज्योतिष शास्त्र की ओर ध्यान आकर्षित होता है। तब वह जन्मपत्री में दोष ढूँढता है। कौन से कुयोग हैं? पूर्वजन्म कृत सर्पशाप, पितृशाप, भ्रातृशाप, ब्राह्मण शाप की वजह से विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान, शुभकर्म की फलदाई नहीं हो रहे हैं। तब स्पष्टतः कुण्डली में दिखलाई देता है 'कालसर्प योग'।

जब व्याधि की चिकित्सा औषध व उपायों से नहीं होती तब कर्मज रोग, कर्मज व्याधि को मानना ही होता है। 'योग रत्नाकर' कहता है-

"न शमं याति या व्याधिः ज्ञेयकर्मजो बुधैः।
पुण्यश्च भेषजे शान्तस्ते ज्ञेयाः कर्म-दोषजाः॥"

कालसर्प योग होता है या नहीं, इसका पहला व प्रत्यक्ष प्रमाण है-इस योग को भुगतने वाले जातकों की जन्म कुण्डलियां एवं उसके कुफलों के बारे में भुक्तभोगी जातकों के कटु अनुभव। हमारे कार्यालय में कालसर्प योग में जन्मे एक हजार से अधिक लोगों की जन्मकुण्डलियाँ एवं व्यक्तिगत रूप से उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तृत आकलन विधिवत रिकार्डेड है। अतः योग स्वयं प्रत्यक्षः प्रमाणित है। इसे और अधिक प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं।

संसार में कुछ प्राणी ऐसे भी हैं, जिन्हें दिन में नहीं दिखाई देता। अपने इस अन्धत्व के लिए वे सूर्य को दोषी ठहराते हैं। बसन्त ऋतु में सूखे ठूंठ व कटे हुए वृक्ष में भी नवीन कोंपल, नए पत्ते उग आते हैं पर करीर (कैर) का वृक्ष बसन्त ऋतु के आगमन को नहीं पहचान पाता क्योंकि उसके तो पत्ते लगते ही नहीं? पुरातन शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों का अवलोकन छिछली व कपट बुद्धि वाला प्राणी नहीं कर पाता? अतः नास्तिक बुद्धि वाले जातक को प्रमाण समझाना अपना सिर पत्थर से फोड़ने के समान ही दुष्कर कार्य है।

नास्तिक बुद्धि वाले ज्योतिषियों से एक प्रश्न है कि सूर्य के दोनों ओर की ग्रह स्थिति से वेसी, वासी एवं उभयचारी योग बनता है या नहीं? चन्द्रमा के दोनों ओर की ग्रहस्थिति से अनफा, सुनफा, दुर्धरा एवं केमद्रुम योग बनता है या नहीं? चन्द्र के साथ शनि होने पर 'विषयोग' एवं चन्द्र के साथ राहु होने पर 'ग्रहण योग' होता है या नहीं? फिर क्या कारण है कि राहु और केतु के द्वारा ग्रसित हो जाने पर आप उन्हें कुग्रह जनित कुयोग नहीं मानते?

महर्षि पाराशर एवं वराहमिहिर जैसे दिग्गज आचार्यों ने 'सर्पयोग' की चर्चा अपने ग्रंथों में की है। 'सारावली' ने सर्पयोग की और अधिक विस्तृत व्याख्या की है। 'मानसागरी', अध्याय 4, श्लोक 10 में स्पष्ट लिखता है कि सप्तमभाव में यदि शनि राहु से युक्त हो तो सर्पदंश से मृत्यु होती है। 'वृहत्संहिता' में राहु सर्प का मुख माना गया है तथा केतु इस सर्प की पूँछ कहा गया है। जैन ज्योतिष एवं दक्षिण भारत के प्राचीन एवं नवीन ग्रन्थों में भी 'कालसर्प योग' का उल्लेख प्रचुर मात्रा में मिलता है। पर पढ़े कौन? अध्ययन-अनुसंधान कौन करे? सत्य एवं सही चीजों को समझने-परखने के लिए समय किसके पास है?

"एक क्षण के लिए हम यह मान भी लें कि कालसर्प योग का वर्णन प्राचीन ग्रन्थों में प्रचलित नहीं था, तो क्या ज्योतिषशास्त्र में नवीन अनुसंधान पर पाबन्दी है। 'कैन्सर एवं एड्स' जैसे खतरनाक रोगों के बारे में पहले किसी को ज्यादा ज्ञान नहीं था तो क्या आज इन रोगों के अस्तित्व को नकारा जा सकता है? नहीं, सत्य की खोज एवं अनवरत अनुसंधान बौद्धिक मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। न तो इसको नकारा जा सकता है, न ही इसे रोका जा सकता है। सत्य के प्रति आँखें मूंदना केवल अज्ञानता है, और कुछ भी नहीं।"

-डॉ. द्विवेदी

कुछ नास्तिक ज्योतिषी लोग 'कालसर्प योग' को मानते हैं पर विधि करने पर कालसर्प योग की शान्ति हो जाती है, इसमें विश्वास नहीं रखते, लाप्सी तो खानी है पर गुड़ से परहेज है। पुष्प की प्रशंसा पर सुगन्ध से एलर्जी है। वे अगिन को तो मानते हैं, उसकी दाहकता उसकी उष्णता के अस्तित्व से इनकार है। कालसर्प योग तो है पर उसका कुप्रभाव नहीं? उलटा यह तो उन्नतिकारक है और उदाहरणार्थ कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों की कुण्डलियों का दृष्टान्त भी देते हैं। अग्नि में शीतलता है, इसके उदाहरण में जलाशय को प्रस्तुत करते हैं। जलकणों की आद्रता के नीचे 'बड़वानल' होता है, इनका उन्हें ज्ञान नहीं? अपने ऊटपटांग उदाहरणों, दृष्टान्तों में वे स्वयं उलझ जाते हैं। अस्तु।

एक बार शहर के प्रतिष्ठित प्रोफेसर हमारे पास आए। अपनी पुत्री की कुण्डली दिखाते हुए पूछा-"इसकी शादी कब होगी?" पुत्री की कुण्डली में कालसर्प योग था। लग्न से सप्तम भाव 'तक्षक' नाम वाला कालसर्प योग था। लग्न में ही चन्द्रमा राहु से ग्रसित था। मैंने सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए कहा कि आपकी बच्ची को स्वप्न में साँप दिखते हैं और डर के मारे ये कई बार बिस्तर भी गीला कर देती है। प्रोफेसर साहब अवाक् से मेरी ओर देखते रह गए। बोले, बच्ची 16 वर्ष की हो गई है तथा इस चिन्ता से मैं बहुत परेशान हूँ। कई इलाज करवाए, कुछ भी फर्क नहीं हुआ। मैंने मुहूर्त देखकर कालसर्प योग की निवृत्ति कराई। बच्ची अब पूर्णतः स्वस्थ है तथा उसे स्वप्न में सर्प दिखाई देने भी बंद हो गए।

कई ज्योतिषी 'कालसर्प योग' में राहु के जाप पर ही जोर देते हैं तथा इसकी विधि कराने की सलाह नहीं देते। यह प्रतिक्रिया भी तथाकथित ज्योतिषी की अल्पज्ञता व अज्ञानता को ही दर्शाती है। 'नास्तिक ज्योतिषी' शब्द से मेरा इशारा उन लोगों की ओर है, जो ब्राह्मणेत्तर हैं तथा ज्योतिषविद्या की विरासत जिन्हें परम्परागत रूप से प्राप्त नहीं है। संस्कार की कमी के कारण ऐसे लोग मन्त्र-तन्त्र विद्या एवं प्रार्थना की शक्ति से अनभिज्ञ होते हैं तथा अनुष्ठान, तपोबल या आशीर्वाद के द्वारा यजमान के भाग्य को पलटने, उसका कल्याण करने की क्षमता नहीं रखते। अतः सात्विक ब्राह्मण ही कर्मकाण्ड का अधिकारी है, इस बात को सदैव ध्यान में रखना चाहिए। शास्त्रकार कहते हैं-

पूर्वं जन्मकृतं पापं, व्याधिरूपेण बाधते।
तत् शान्तिरौषधैर्दानैः जप श्राद्धादि कर्मभिः॥

पूर्वजन्म में किए गए पाप, इस जन्म में व्याधि (बाधा) के रूप में प्रकट होते हैं। उसका परिहार जप, दान, श्राद्ध व शान्ति कर्म से ही सम्भव है।

कालसर्प योग के विविध प्रकार

प्राचीन विद्वानों ने 12 प्रकार के कालसर्प योग का विश्लेषण किया है तथा इन योगों को अनन्त, कुलिक, वासुकी, शंखपाल, पदम, महापदम, तक्षक, कर्कोटक, शंखचूड़, घातक, विषधर तथा शेष इन नामों से अभिहित भी किया है। ये सभी योग लग्न से सप्तम एवं द्वितीयभाव से अष्टम भाव से क्रमवार-स्थिति को लेकर बनाए गए। इनके सही फलादेश के लिए जिस भाव में राहु है, उस भावेश की स्थिति तथा अन्य योगायोगों का तुलनात्मक अध्ययन करना जरूरी है।

कालसर्प योग के 62,208 व्यावहारिक विभाजन

अब तक हमारी मान्यता थी कि कालसर्प योग मात्र 12 प्रकार के होते हैं। परन्तु व्यावहारिक परीक्षणों से पता चला कि अलग-अलग लग्नों में घटित होने वाले अलग-अलग प्रकार के अनन्तादि कालसर्प योग का असर अलग-अलग प्रकार से घटित होता है। उदाहरणार्थ-लग्न से लेकर सप्तम भाव तक राहु-केतु से ग्रसित योग को अनन्तनाग नामक कालसर्प योग कहते हैं। अब लग्न में पीड़ा मेषराशिगत राहु, वृषराशिगत राहु से भिन्न असर देगा। इसी प्रकार मिथुनलग्नगत राहु का प्रभाव सिंह लग्न से भिन्न होगा। इसी दृष्टि से मोटे तौर पर 12 × 12 = 144 प्रकार के कालसर्प योग बनते हैं।

इसमें भी 'उदित गोलार्द्ध' (आरोह) एवं 'अनुदित गोलार्द्ध' (अवरोह) के भेद से यह संख्या 144 से द्विगुणित हो जाती है। (144 × 2 = 288) इस प्रकार से कालसर्प योगों की कुल संख्या 288 प्रकार की बनती है।

उपरोक्त अवस्थाओं में यदि किसी जातक का जन्म अमावस्या के दिन या सूर्यग्रहण जैसी ग्रह स्थिति में हो तो कुण्डली में उग्र कालसर्प योग की स्थिति बनेगी। इसके विपरीत यदि पूर्णिमा का जन्म हो तो चन्द्रग्रहण संज्ञक कालसर्प योग बनेगा। फलतः 288 + 144 उग्र + 144 चन्द्रग्रहण कुल = 576 प्रकार के विभाजन वैज्ञानिक तौर पर बने।

इनमें से यदि एक ग्रह इनकी पकड़ से बाहर निकल जाए तो 'आंशिक कालसर्प योग' बनता है। कई बार चन्द्रमा बाहर निकल जाता है, कई बार मंगल तो कभी शनि अर्थात् 576 प्रकार की कुण्डलियों को नौ ग्रह एवं 12 भावों में

विभाजित करने पर 576 × 9 × 12 = 62,208 प्रकार कुण्डलियों के फलादेश का सटीक अध्ययन अनुसंधान के लिए जरूरी है। केवल दो-चार जन्म कुण्डलियों के विश्लेषण से हम किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सकते। बासठ हजार दो सौ आठ प्रकार की इन सभी जन्मकुण्डलियों के फलादेश अलग-अलग प्रकार के होंगे। कालसर्प योग के फलादेश पर विस्तृत विवेचना एवं इन पर विस्तृत शोधकार्य आज के युग की प्रबल मांग है। प्रबुद्ध पाठकों की जिज्ञासा शान्त करने हेतु उदित गोलार्द्ध एवं अनुदित गोलार्द्ध का भेद निम्न दो उदाहरण कुण्डलियों के द्वारा स्पष्ट करना चाहूँगा। उदाहरण कुण्डली-

अनुदित गोलार्द्ध	उदित गोलार्द्ध
1. श्री राजकुमार सोनी	2. श्री अशोक सचदेवा
जन्म : 4-12-1959	जन्म : 28-7-1955
प्रात: 02-26 अजमेर (राज.)	प्रात: 05-00 बम्बई (महाराष्ट्र)

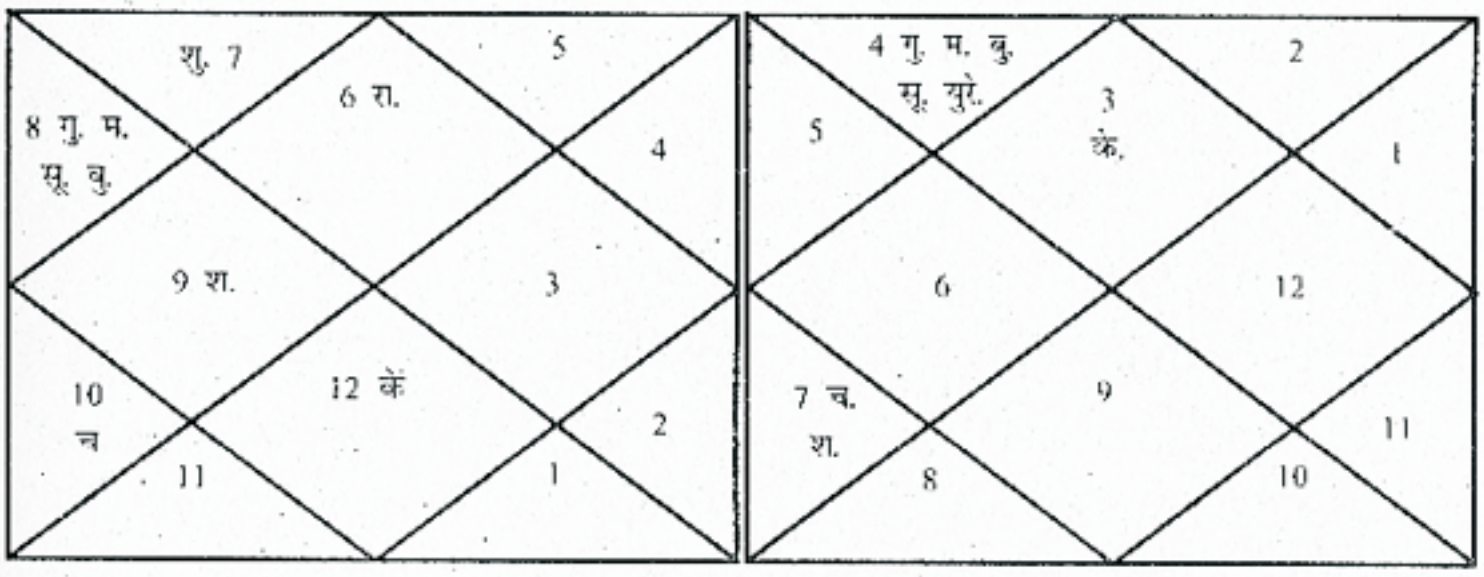

राहु-केतु हमेशा उलटे चलते हैं। श्री राजकुमार सोनी की कुण्डली में गोचर का राहु पहले सिंह राशि में जाएगा। फिर कर्क वगैरह को क्रमश: ग्रसित करेगा अर्थात् कुण्डली के खाली भाग में गतिशील होगा तो यह 'अनुदित गोलार्द्ध' वाला कालसर्प योग हुआ।

नम्बर दो वाली उदाहरण कुण्डली श्री अशोक सचदेवा की है। जिसमें अनन्त नामक कालसर्प योग ही है परन्तु जब गोचर में ग्रह चलेंगे तो राहु पहले पश्चिम राशि में जाएगा फिर क्रमश: तुला-कन्या वगैरह में जाएगा। राहु सर्प का मुख कहा गया है। फलत: राहु के मुख में ग्रसित होते चले जाएंगे अत: यह उदित गोलार्द्ध वाला कालसर्प योग हुआ। उदित गोलार्द्ध वाले को पीड़ा व कष्ट जन्म से ही शुरू हो जाते हैं तथा राहु जब इस घेरे से बाहर निकलता है, तब उसे आराम मिलता है। जबकि अनुदित गोलार्द्ध वाले को प्रारम्भ में इतना कष्ट वगैरह कुछ नहीं होता। उसको कष्ट का अनुभव तभी होगा जब राहु गोचर में आकर

के ग्रहों को ग्रसित करना शुरु करेगा। यह सब प्रैक्टिकल रूप से अनुभूत बातें हैं जो पहली बार प्रकट की जा रही हैं।

जैसे उपर्युक्त दोनों कुण्डलियाँ अनन्त नामक कालसर्प योग की होती हुई भी उसके फलादेश अलग-अलग होंगे। वर्गीकरण का यह सूक्ष्म भेद पाठकों को सही ढंग से समझ लेना चाहिए।

विशेष समझ

किसी भी प्रकार का कालसर्प योग यदि राहु से प्रारम्भ हो रहा हो तो वह ज्यादा खतरनाक है। केतु से लेकर राहु पर्यन्त दिखाई देने वाला योग इतना खतरनाक नहीं होता। एक बात सदैव याद रखें-कालसर्प योग पुत्र-सन्तान के लिए विशेष रूप से तभी बाधक है जब वह पंचमस्थ राहु लग्न बनता हो। जन्मकुण्डली के जब सारे ग्रह राहु+केतु के बीच में पूर्ण रूप से कैद हो जाते हैं, तब 'पूर्ण कालसर्प योग' बनता है। ऐसी स्थिति में जिस भाव में राहु होगा, उस भाव के सुख से जातक को वंचित करेगा। राहु+केतु की कैद में से एकाध ग्रह बाहर निकल जाएं तो आंशिक कालसर्प योग बनता है। आंशिक कालसर्प योग का कुफल आधा होता है पर होता जरूर है। यह मेरे अनुभव से आया क्योंकि यह पुस्तक लिखने तक कम्प्यूटर की मदद से कुल एक लाख से अधिक विविध लग्नों के जन्म कुण्डलियों का संग्रह हमारे कार्यालय में हो चुका है।

1. अनन्त नामक कालसर्प योग

लग्न से लेकर सप्तम भाव पर्यन्त राहु-केतु के मध्य या केतु-राहु के मध्य फंसे ग्रहों के कारण 'अनंन्त कालसर्प योग' बनता है। ऐसे जातक को व्यक्तित्व निर्माण के लिए, आगे बढ़ने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है। इसका प्रभाव इनके गृहस्थ जीवन पर भी पड़ता है तथा इनका वैवाहिक जीवन कष्टमय होता है। ऐसा मनुष्य अपने कुटुम्बियों से नुकसान पाता है। मानसिक परेशानी पीछा नहीं छोड़ती, एक के बाद एक अनन्त मुसीबत आती ही रहती हैं। अपने व्यक्तित्व निर्माण हेतु निरन्तर संघर्ष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति कई प्रकार के काम करके छोड़ देता है। कोई भी काम में स्थाई रुचि नहीं रहती।

श्रीमती सूर्यकान्ता काम (विधायक जोधपुर)
जन्म : 22.2.1934
समय : 2.12 A.M. (रात्रि)
स्थान : जोधपुर (राज.)

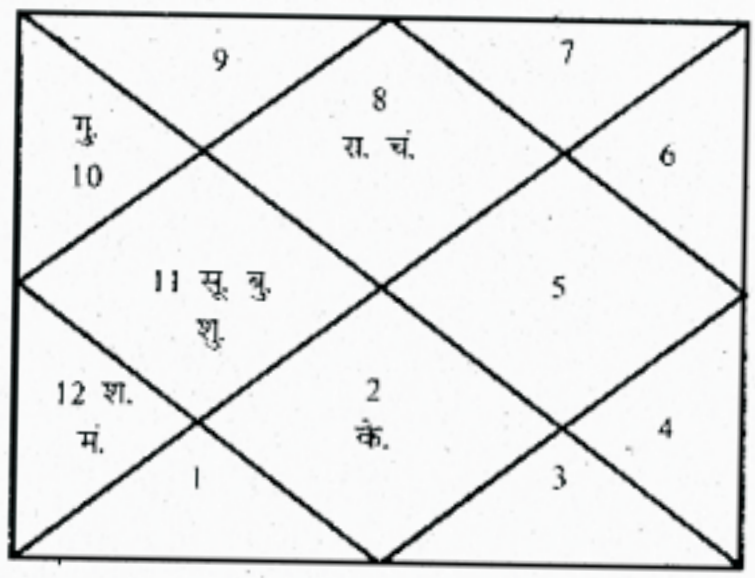

सारसंक्षेप–

जोधपुर शहर में अनेक बार विधायिका के रूप में निर्वाचित, अजेय राजनेता के रूप में प्रतिष्ठित श्रीमती सूर्यकान्ता का जन्म 'ज्येष्ठानक्षत्र' में होने से इनका जन्म नाम जेठी बाई है। जोधपुर में सभी लोग प्यार से इन्हें 'जीजी' के नाम से पुकारते हैं।

1. पंचमेश बृहस्पति नीच का होने से विद्यायोग शून्य, पंचम भाव में पापग्रह, एक पुत्र तीन पुत्रियां।
2. सप्तम भाव में केतु होने से 'वैध व्ययोग' बना। पति श्री उमाशंकर व्यास की मृत्यु 9.2006 को हुई।
3. अनन्तनामक पूर्ण कालसर्प योग आरोह अवस्था में होने से बार-बार जोधपुर शहर की प्रतिष्ठित सीट पर अच्छे मतों से विजयी होने के बावजूद, मंत्री पद या किसी महत्त्वपूर्ण राजनैतिक पद पर आरुढ़ नहीं हो पाईं।

तानाशाह हिटलर

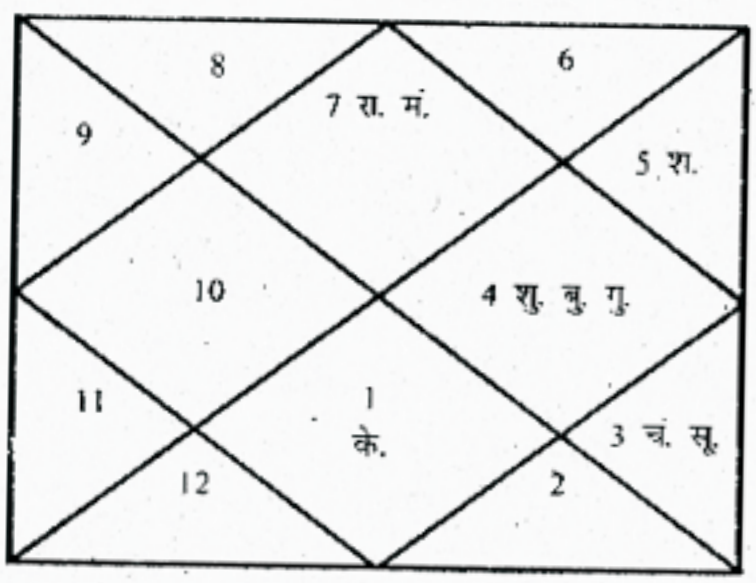

जन्म : 20.4.1889
समय : 18:30
स्थान : जर्मनी

हिटलर की मूल पराजय एवं अकाल मृत्यु का कारण भी कालसर्प योग रहा है। भयंकर संघर्ष के बाद भी अन्त तक कोई मंजिल प्राप्त नहीं हुई। मित्रों ने परिजनों ने धोखा दिया। वैवाहिक सुख, सन्तान सुख शून्य था।